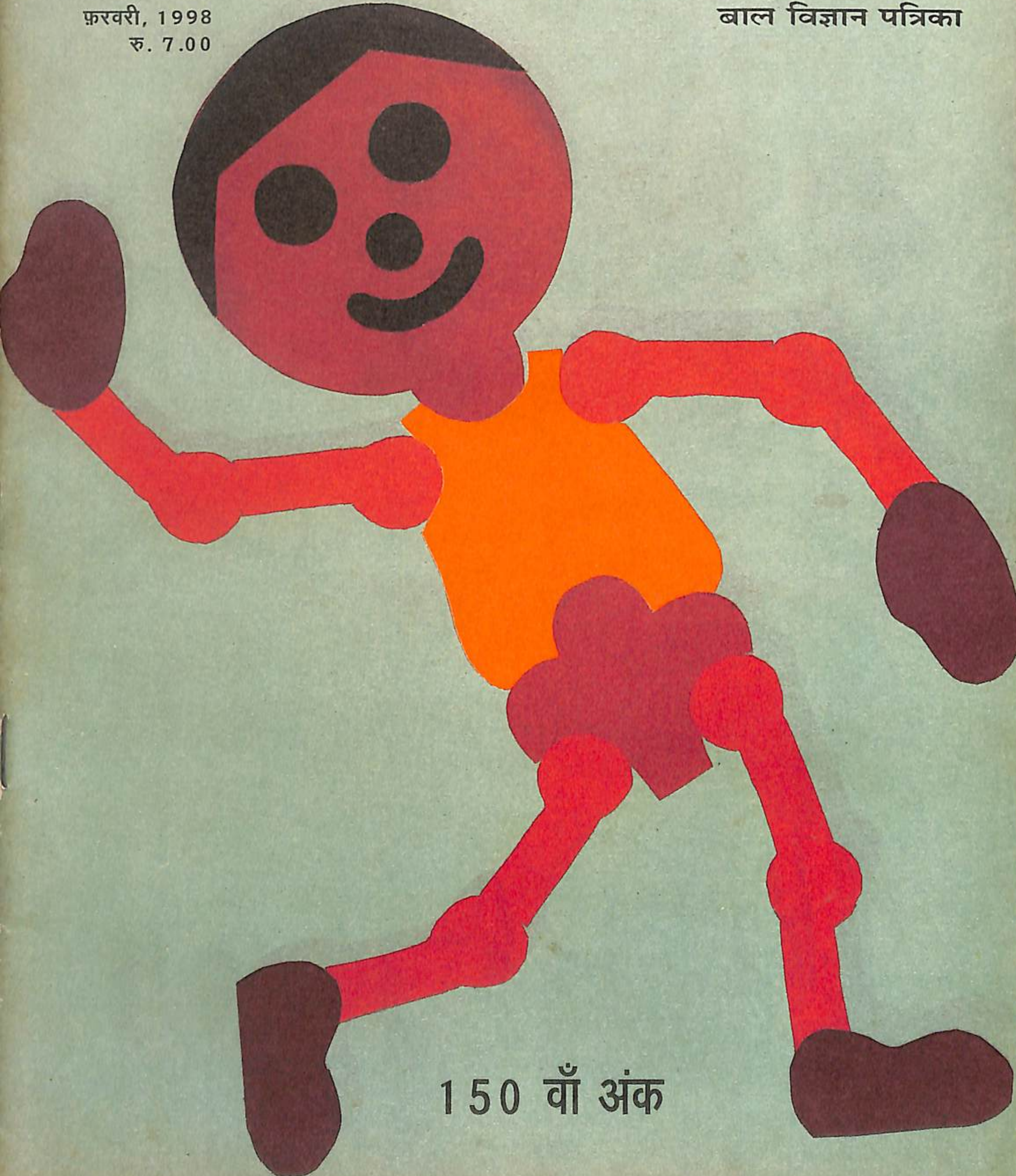
चकमक

फ़रवरी, 1998
रु. 7.00

बाल विज्ञान पत्रिका



150 वाँ अंक



रीना टोक, नौवीं, भोपाल, म.प्र.



एम. सथ्या, आठवीं, कमलमपुंडी, तमिलनाडू

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-13 अंक-8 फरवरी, 1998

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम,
अशोक रोकड़े

चकमक का चंदा

एक प्रति	सात रुपए
छमाही	40.00 रुपए
वार्षिक	75.00 रुपए
दो साल	140.00 रुपए
तीन साल	200.00 रुपए
आजीवन	750.00 रुपए

साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।

आजीवन : 1000.00 रुपए साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।

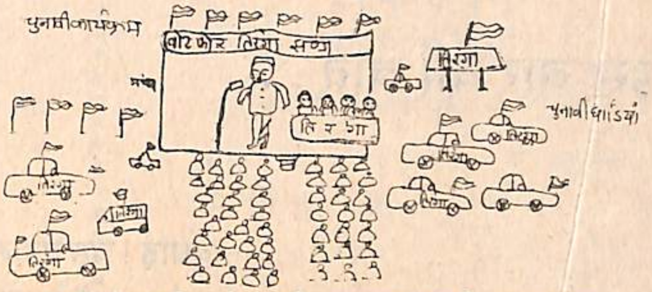
सभी में डाक खर्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से ***एकलव्य*** *के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।*

कवर का कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई -1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380



महेन्द्र श्रीमाली, नौवीं, फालना, पाली, राजस्थान

150 वें अंक में ...

विशेष
- 8 ❑ बाल विज्ञान मेला
- 11 ❑ भागीदारों की जुबानी

कविताएँ
- 10 ❑ इतना भारी बस्ता
- 22 ❑ लो गुब्बारे वाला आया

कहानी
- 20 ❑ दानी पेड़

धारावाहिक
- 37 ❑ क़िस्सा बुरातीनो का : आख़िरी किस्त

हर बार की तरह
- 2 ❑ इस बार की बात
- 28 ❑ खेल काग़ज़ का : बुक मार्क
- 32 ❑ वर्ग पहेली : 80
- 34 ❑ माथा पच्ची
- मेरा पन्ना पृष्ठ 5, 6, 7, 30 एवं 31 पर

और यह भी
- 3 ❑ पाठक लिखते हैं
- 16 ❑ तुम भी बनाओ : जोकर
- 19 ❑ ग्रामीण विज्ञान प्रदर्शनी
- 23 ❑ भूली बिसरी यादें : 4
- 33 ❑ केन्द्रीय विद्यालय बाल विज्ञान कांग्रेस
- 36 ❑ चकमक समाचार : बालोत्सव

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

बधाई ! यह चकमक का 150 वाँ अंक है। चकमक के पाठकों और रचनाकारों के लगातार सहयोग के बिना इस मंजिल पर पहुँचना सम्भव नहीं था। अभी और भी मंजिलें तय करनी हैं....और इस सफ़र में सभी चकमक के साथ होंगे, यह अपेक्षा है।

हर साल फ़रवरी की 28 तारीख विज्ञान दिवस के रूप में मनाई जाती है। इस साल भी विज्ञान दिवस पर तरह-तरह के आयोजन होंगे। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में दिसम्बर के महीने में ही बच्चों की विज्ञान शिक्षा से जुड़े तीन बड़े कार्यक्रम हुए।

सबसे पहले दिसम्बर के शुरू में ही केंद्रीय विद्यालयों की बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन हुआ। इसमें देश भर से केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। दूसरा आयोजन था म. प्र. के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों की चौथी राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी। इसमें ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। और फिर दिसम्बर के अंतिम दिनों में पाँचवीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान काँग्रेस का आयोजन हुआ। इन सबके बारे में तुम अंदर विस्तार से पढ़ोगे।

इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य था कि बच्चों के बीच विज्ञान और विज्ञान की शिक्षा को अधिक रोचक कैसे बनाया जाए। वास्तव में आज जब विज्ञान में नई-नई खोजें हो रही हैं और टेक्नॉलॉजी का विकास हो रहा है, तब यह काम और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विज्ञान शिक्षा अधिक रोचक तभी हो सकती है जब उसका सम्बंध हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से हो, उसके सिद्धांत और उसके उदाहरण हमारे आसपास नज़र आएँ। चकमक भी मुख्य रूप से इसी कोशिश में लगी है।

तो तुम्हारे सामने है इसी अभियान को आगे बढ़ाता एक और अंक।



अभिषेक कुमार जैन, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

पाठक लिखते हैं

हमारे आचार्य जी पढ़ाते कम और लिखाते ज़्यादा हैं। कक्षा में सब आचार्य जी बातचीत करते रहते हैं। ख़ाली एक आचार्य जी पढ़ाते हैं। मुझे चकमक अच्छी लगती है। मैं चकमक में चित्र भेजता हूँ, पर आप एक बार भी नहीं छापते हैं।

❑ गोलू राठौर, दूसरी,
लालाखेड़ी, शाजापुर, म.प्र.

चकमक का नवम्बर, 97 अंक सचमुच नन्हे रचनाकारों का 'मेरा पन्ना' अंक था।

कविता सुरेश ने 'बुरा मान गए?' के माध्यम से बच्चों के मन में प्रकाशन से संबंधित उठने वाली बहुत-सी शंकाओं का समाधान जिस प्यार-दुलार से किया है, उससे अवश्य ही बाल रचनाकारों (नन्हे रचनाकारों) को बहुत लाभ होगा। नए ढंग से सोचने और कुछ रचनात्मक करने की प्रेरणा उन्हें मिलेगी इस लेख से। बहुत मन और अपनेपन से लिखे गए इस पत्र/बातचीत/लेख (क्या कहूँ!) के लिए बच्चों की तरफ से कविता सुरेश और चकमक सम्पादकीय परिवार को बहुत-बहुत बधाई!

❑ श्याम सुशील, दिल्ली

हम सब यहाँ पर हमारे केन्द्र में कक्षा 1, 2, 3 तथा 4 तक पढ़ाई करते हैं। हमारे केन्द्र पर कभी-कभी चकमक पहुँचती है। हमें चुटकुले व पहेलियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। हमारे गुरुजी हमें पढ़वाते हैं। उसका प्रयोग पढ़कर-पढ़कर समझाते हैं। जो हमें बहुत अच्छा लगता है।

❑ हम कक्षा 3 के छात्र-छात्राएँ
गोपाल, शोपाल, हेमगज,
कक्षा 4 के छात्र-छात्राएँ
गीता, शाना आदि, सहज शिक्षा केन्द्र,
गढ़ी, अजमेर, राजस्थान

मैं चकमक को नियमित रूप से पढ़ने वाला हूँ, मुझे चकमक बहुत प्रिय लगती है। यह पत्रिका वास्तव में बच्चों के लिए वरदान है। क्योंकि इसमें समाहित रोचक जानकारी, वैज्ञानिक विश्लेषण, रोचक और ज्ञानवर्धक तथ्य, मनोरंजन और विविध जानकारी आदि रहती है।

मेरा एक सुझाव है कि चकमक में सभी प्रकार की रोचक जानकारी दी जाती है। किन्तु यदि इसमें एक पेज की वृद्धि करके 'सामान्य ज्ञान' और नए-नए व्यंजन बनाने के नुस्खे आदि चकमक में प्रकाशित किए जाएँ, तो चकमक की चमक-दमक में भी और दिन-दूनी रात-चौगुनी वृद्धि हो जाएगी।

❑ कमलेश्वर डहरे, दसवीं, बागबहरा, रायपुर, म.प्र.

यहाँ से काट लें



दीपक कुमार मोतियाणी, उज्जैन, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....

नवम्बर, 97 अंक मिला। 'मेरा पन्ना अंक' में बच्चों के सभी चित्र, कहानियाँ, कविताएँ पढ़ीं, सभी अच्छी लगीं। खासकर अनीता अग्रवाल, गंगटोक की 'सपना' कविता तो दिल को छू गई।

कविता सुरेश ने 'बुरा मान गए?' स्तम्भ के अन्तर्गत बहुत ही सरल व सीधी भाषा में चकमक में प्रकाशित सामग्री के चुनाव के बारे में हम सबको अवगत कराकर बच्चों का गुस्सा छीन लिया।

'अपनी नज़र में' के द्वारा बच्चों को पुलिस थाने की सैर कराके, उनमें निर्भिकता लाने का अच्छा काम किया। व उसके ज़रिए नागरिकों के लिए कार्यरत संस्थाओं के लिए लिखने का आह्वान भी अच्छा है।

इसी तरह अगर एक छोटी प्रेरणादायी कहानी आप हर अंक में दें व पंचतंत्र या उसके जैसी हल्की मनोरंजक पर सीख से भरपूर चित्रकथा। चाचा सवालीराम से हर अंक में बच्चों के मन में घूमने वाले हल्के-फुल्के सवालों के जवाब भी नियमित दें, तो चकमक में चार चाँद लग जाएँगे।

पहले हम सोचते थे कि चकमक में ज़्यादातर मध्यप्रदेश के बच्चों की सामग्री ही छपती है। परन्तु इस अंक में सम्पूर्ण भारत के बच्चों की अलग-अलग रचनाएँ देखकर लगा कि चकमक धीरे-धीरे पूरे भारत में अपनी पहचान बना रही है। हमारा मन तो करता है कि इतनी अच्छी पत्रिका दुनिया में हर बच्चा पढ़ सके। ख़ैर वो भी दिन शीघ्र आएगा।

☐ राजकुमार गुप्ता, नाशिक रोड बंदी शाला, नाशिक, महाराष्ट्र

148 वाँ अंक दिसम्बर, 97 का मिला। कैलेन्डर बहुत ही अच्छा निकाला है। हस्तलिखित कविता कैलेन्डर पर देकर आपने नवीनता और मौलिकता का परिचय दिया।

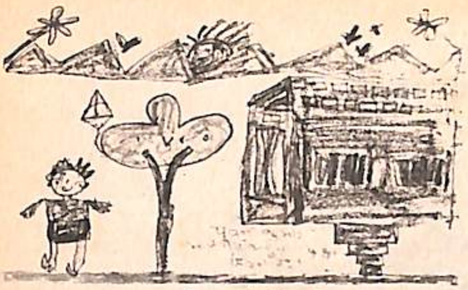
☐ शकुंतला सिरोठिया, इलाहाबाद, उ.प्र.

आप द्वारा प्रकाशित मासिक बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' मैं बराबर अध्ययन करता हूँ। जिसमें बच्चों की कुशलता की झलक मिलती है। साथ ही नई-नई जानकारियों का अध्ययन करने को मिलता है, जो मुझे यह कहने में विवश कर रहा है कि चकमक बाल पत्रिका सचमुच प्रशंसा के योग्य है।

☐ सुभाष अकेला, वाराणसी, उ.प्र.

दिसम्बर की चकमक मिली। जिसमें रंगीन फोटोग्राफी बेहद पसन्द आई। नए कैलेण्डर के साथ, 'जीवन जाता यहीं ठहर', और 'काँप रहे सब थर थर' कविता अच्छी लगी। नया स्तम्भ - 'भूली-बिसरी यादें' बहुत अच्छा लगता है। चकमक में यह नियमित रूप से प्रकाशित करें। 'पूस की रात' कहानी अच्छी है। लेकिन यह कहानी मेरी हिन्दी की किताब में भी है।

☐ विनोद प्रजापत



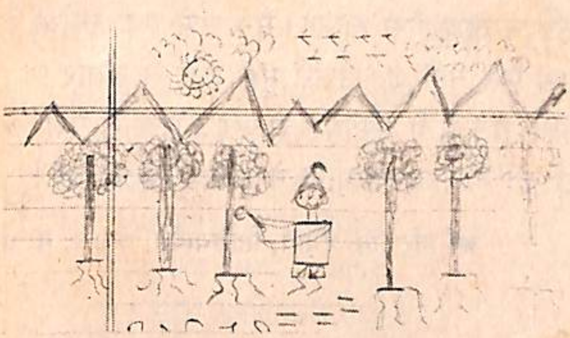
पवन कुमार मालवीय, चौथी, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.



प्रकृति जोशी, 4 वर्ष, विशाखापत्तनम, आंध्रप्रदेश



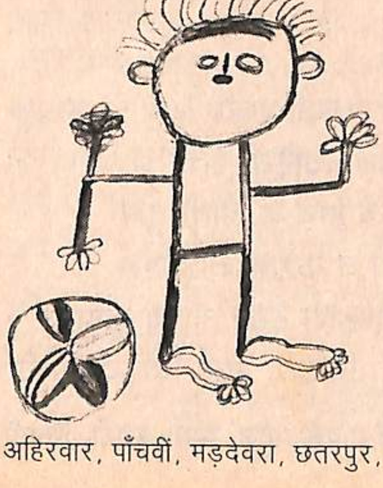
अर्जुन सिंग लोधी, दस वर्ष, कुम्हारी, दमोह, म.प्र.



राजकुमार पाटीदार, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.



सुमेधा पण्ड्या, पहली, उज्जैन, म. प्र.

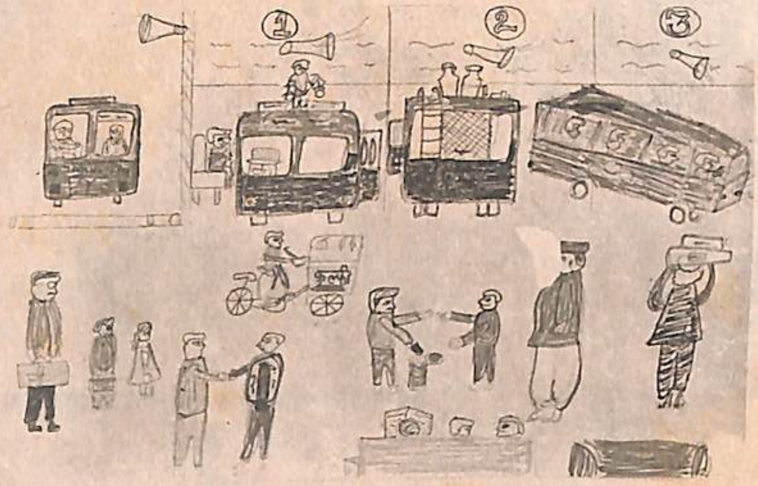


मुरली अहिरवार, पाँचवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



अरविन्द कुमार यादव, दूसरी, मुरमुंडा, नंदिनी, दुर्ग, म. प्र.

आफत पड़ी और मार पड़ी



तरुण कोठारी, नौवीं, सेंधवा, म. प्र.

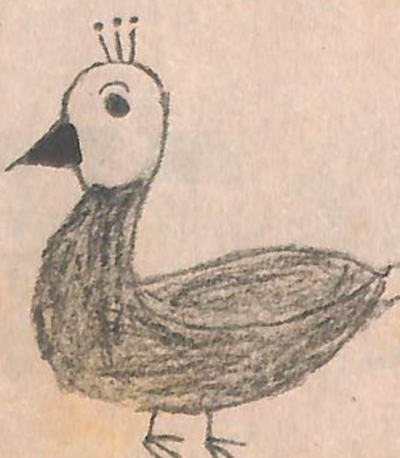
एक बार मेरा दोस्त और मैं फ़िल्म देखने गए। मैंने अपने पापा मम्मी से नहीं पूछा था। और तब फ़िल्म देखने चल दिए। जब फ़िल्म पूरी हो गई तो हम अपने घर आने के लिए बस का रास्ता देख रहे थे। लेकिन मेरे पास कुल एक रुपया था। जबकि हमारे गाँव से इस शहर तक डेढ़ रुपया लगता है। जब बस आई तो मैं बस में बैठने लगा तभी कंडक्टर ने कहा पैसे लाओ। मैंने उसे एक रुपया दे दिया कंडक्टर ने कहा पचास पैसे और दो। पर मेरे पास पैसे नहीं थे। उसने मुझे बस से उतार दिया। और जितने भी दोस्त थे वे बस में बैठने लगे। फिर मैंने बड़ी मुसीबत से मेरे दोस्त से पैसे माँगे और फिर मैं अपने घर आया। मम्मी ने मेरी पिटाई की फिर सुबह पापा ने अलग पिटाई की।

हरिओम श्याग, पाड़ियादेह, देवास, म. प्र.

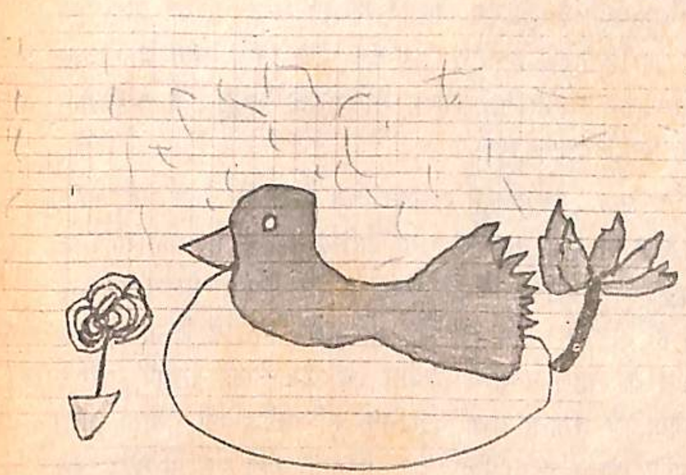
चिड़िया रानी

चिड़िया रानी चिड़िया रानी
तुम करती हो बहुत शैतानी
उछल कूदकर
मन ललचाकर
बन जाती हो सबकी रानी
चिड़िया रानी चिड़िया रानी
किसी के हाथ न आती तुम
कभी न करती कोई गम
तुम्हारी देखो अजब कहानी
चिड़िया रानी चिड़िया रानी

गायत्री पटेल, चौथी, खामी, सिवनी, म. प्र.



खुशबू सोनबोईर, 6 वर्ष, बालोद, दुर्ग, म. प्र.



मेघा कुशवाहा, पहली, बुदनी, सीहोर, म. प्र.

चिड़िया

चिड़िया चीं चीं करती है
हम सब की नींद उड़ाती है
हम सबकी आँखें खोल देती है
हम सबको उठा देती है
हम सबको काम पे लगाती है
सुबह-सुबह मधुर गीत गाती है
हम सबको ललचाती है
हम सबको ये भाती है

राजेश वर्मा, सतवास, देवास, म. प्र.

शरारती गुड़िया

एक नन्ही-सी प्यारी गुड़िया
बातें करती बुढ़िया जैसी
शरारत करती रहती हर वक्त
सुबह हो या शाम दोपहर
पापा जब दफ्तर से आते
ढेर सारी उनसे बातें करती
दिन भर ये मम्मी को सताती
सारे घर में धमाचौकड़ी मचाती
दादा जी को अखबारी बातें सुनाती
दादी जी को बगीचा घुमाने ले जाती
शाम को जब मैं स्कूल से आता
प्यारे भैया कहकर गले लग जाती
मुझको भी पढ़ने नहीं देती
पुस्तक ले लुक-छिप जाती
जब वह सो है जाती
तब कहीं हमको चैन है आती
एक नन्ही-सी प्यारी गुड़िया
बातें करती बुढ़िया जैसी

सुबोध साकल्ले, आठवीं,
भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.



राहुल चौबे, चौथी, सेमरा गेट, भोपाल, म. प्र.

बाल विज्ञान मेला

पिछले साल, यानी 1997 के आख़िरी चन्द दिनों में भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में बच्चों का एक खूब बड़ा मजमा लगा था। देश भर से करीब 600-700 बच्चे इकट्ठे हुए थे। पाँच दिनों तक वहाँ खूब चहल-पहल रही, हँसी-मज़ाक, नाच-गाना तथा अन्य कार्यक्रम चलते रहे। मौका था पाँचवीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का। इसका आयोजन 27 से 31 दिसम्बर तक किया गया था।

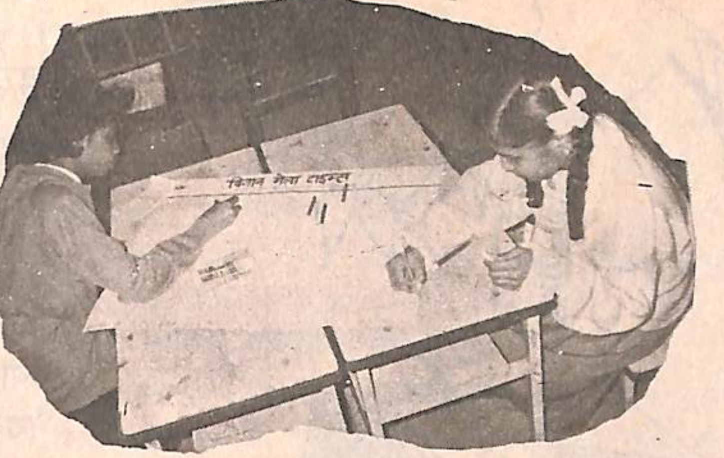
मुझे पता था, कि तुम सब तपाक से पूछ बैठोगे कि यह बाल विज्ञान कांग्रेस क्या बला है? नहीं भई, नहीं, यह किसी राजनैतिक पार्टी द्वारा बच्चों के लिए या विज्ञान के लिए चलाया गया अभियान नहीं है। कांग्रेस शब्द का अर्थ होता है किसी ख़ास काम के लिए या मकसद से बहुत से लोगों का मिलना। इसे हम सम्मेलन भी कह सकते हैं या मेला भी। आख़िर मेले में भी तो मेलजोल ही होता है। अब तुम यह भी पूछोगे किसने किया था यह मेला? भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् काम करती है। इसका मुख्य काम है - विज्ञान को लोकप्रिय बनाना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना। इस परिषद् की पहल पर विज्ञान तथा समाज में आपसी तालमेल के लिए देश में काम कर रहे विभिन्न जन संगठनों ने मिलकर एक राष्ट्रीय नेटवर्क बनाया है। इसे इसके अंग्रेज़ी के संक्षिप्त नाम एन.सी.एस.टी.सी. नेटवर्क, से जाना जाता है।

1993 में इस नेटवर्क के सदस्यों ने तय किया कि 10 से 17 साल तक की उम्र के बच्चों के बीच विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जाए। तब से हर साल यह कांग्रेस या मेला आयोजित हो रहा है। हर साल इस मेले का एक विषय तय किया जाता है।

जैसे वैज्ञानिकों के सम्मेलनों में वे किसी विषय में की गई खोज या शोध या सर्वे आदि को प्रस्तुत करते हैं, फिर दूसरे वैज्ञानिक उस पर सवाल-जवाब करते हैं। ठीक उसी तरह, इस विज्ञान मेले में बच्चे एक ख़ास विषय के बारे में उनके द्वारा जो खोजबीन की गई, सर्वे किए गए या नए-नए क़िस्म के मॉडल बनाए, उन सबको प्रस्तुत करते हैं। इस बार का विषय था - 'मेरे सपनों का भारत - आओ इसे साकार करें'।



पहले देश के हर राज्य के हर ज़िले में दिए गए विषय पर बच्चों से स्कूल के ज़रिए मॉडल बनाने, सर्वे आदि करने को कहा गया था। फिर हर ज़िले से कुछ चुने हुए मॉडल, सर्वे रिपोर्ट, शोधकार्य आदि राज्य स्तर पर प्रस्तुत किए गए। राज्य स्तर पर जो चुने गए, उन्हें मौका मिला भोपाल के राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भाग लेने का।



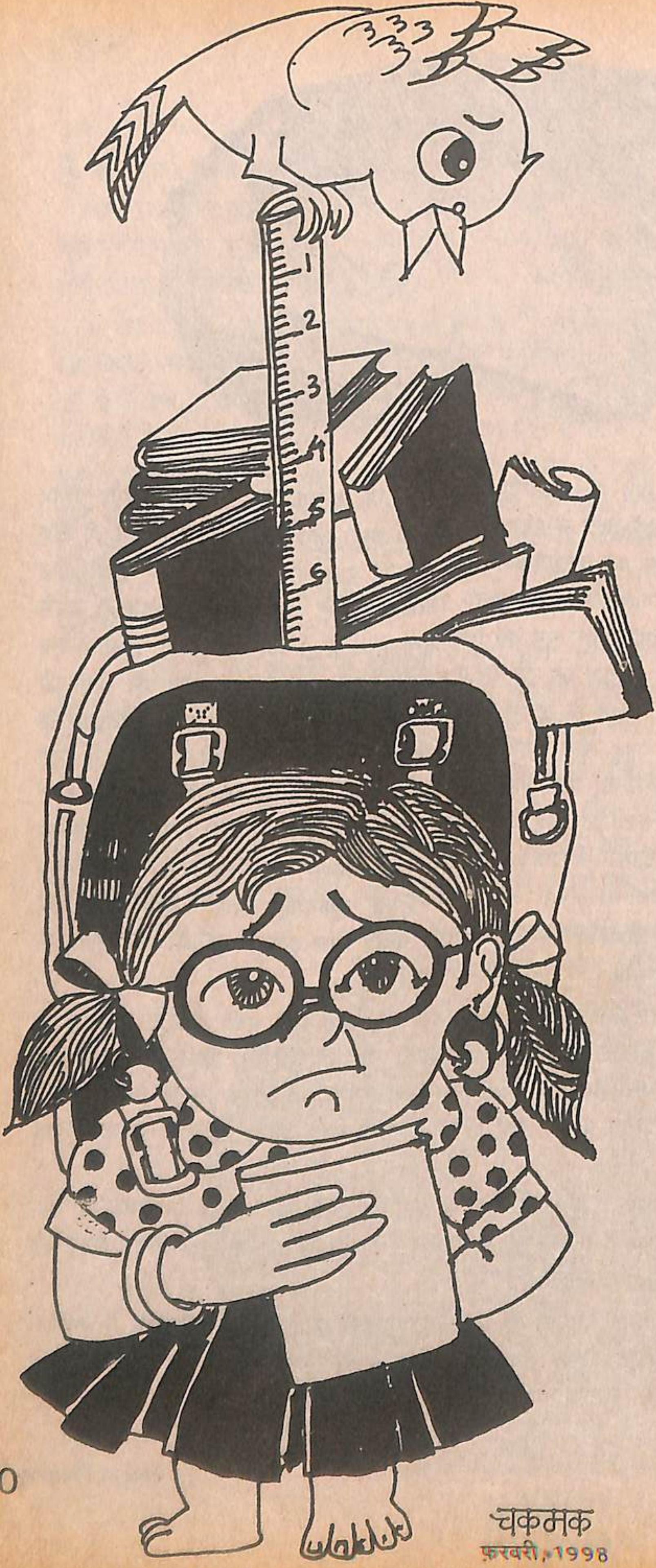
अब ज़रा यह भी सुन लो कि इस मेले में क्या-क्या था। ऊपर जो बताया वह तो ज़रा गंभीर-गंभीर मामला था। पर मेले में, जैसा कि अक़्सर मेलों-ठेलों में होता है, और भी बहुत कुछ था। मुख्य कार्यक्रम तो दिए गए विषय पर बच्चों के द्वारा किए हुए काम का प्रस्तुतिकरण ही था। पर साथ में दिन भर, इन बच्चों और भोपाल के दूसरे स्कूली बच्चों के लिए कई गतिविधियाँ भी चलती रहती थीं। जैसे एक कमरे में चित्रकारी करने का पिटारा होता था। बस जब मन हो - आओ, अपने मन का चित्र बनाओ। एक से मन न भरे तो दो-तीन बना लो। एक जगह काग़ज़ मोड़-मोड़कर खिलौने बनवाए जा रहे थे। एक जगह कुछ साँप रखे थे और इन साँपों को पालने वाले जनाब इनके बारे में हम सबको बताते थे, इनसे हमारी दोस्ती करवाते थे। एक कमरे में विज्ञान के सरल-सरल प्रयोग जारी थे। तो एक जगह जादू और चमत्कार के पीछे के रहस्यों का खुलासा किया जा रहा था। कहीं बच्चे माथापच्ची के सवालों से जूझते थे, कहीं काग़ज़ के तरह-तरह के हवाई जहाज़ बनाकर उड़ाना सीख रहे थे, तो कहीं अपने ही शरीर से परिचय कर रहे थे। लेकिन इन सब बच्चों पर कड़ी निगरानी रखे हुए थे कुछ और बच्चे। ये थे इस मेले के दीवार अख़बार "विज्ञान मेला टाइम्स" के रिपोर्टर। ये हर जगह घूम-घूमकर गतिविधियाँ देखते थे, दूसरे बच्चों से उनके अनुभव लिखवाते, तकनीकी सत्रों में बैठकर वहाँ की बातों का ब्यौरा लिखते, बच्चों से उनकी लिखी कविता/कहानी, उनके बनाए चित्र इकट्ठा करते। और शाम को इस सब को छाँटकर, ठीक-ठाक करके एक दीवार अख़बार तैयार करते थे।

पर यहाँ ही मेला ख़त्म नहीं हो जाता। रोज़ रात को खाना खाने के बाद सारे बच्चे इकट्ठे हो जाते थे संस्थान के सभागार में। और देर रात तक चलता था, नाच-गाना-बजाना और मौज-मस्ती। किसी-किसी दिन इन बच्चों के लिए "आमने-सामने" कार्यक्रम में किसी प्रसिद्ध वैज्ञानिक या समाजसेवी आदि से मिलने का मौका भी होता था। मिलना यानी औपचारिक मिलना नहीं, उनकी बातें सुनना, अपनी बातें कहना, बेधड़क सवाल-जवाब करना, सब शामिल था।

सारे राज्यों से बच्चों के साथ चूँकि उनके शिक्षक भी आए थे इसलिए उनके लिए शिक्षा के विषय पर एक दिन एक चर्चा सत्र भी रखा गया था। पर अब मैं अपना मुँह बन्द कर लेती हूँ। बहुत कुछ सुना दिया। बाक़ी की कहानी इस मेले में शामिल बच्चे अपनी रिपोर्टों के ज़रिए सुनाएँगे।

हाँ, तुम्हें यह बताते चलूँ कि इस पाँचवीं कांग्रेस का आयोजन एन.सी.एस.टी.सी. - नेटवर्क में शामिल संस्थाओं के सहयोग से साइंस सेंटर, ग्वालियर तथा म.प्र. शासन के शिक्षा विभाग ने किया। बच्चों के लिए गतिविधियों का आयोजन एकलव्य ने, साइंस सेंटर, ग्वालियर, सेक्ट, म.प्र. विज्ञान सभा, जवाहर बाल भवन, भोपाल आदि के सहयोग से किया।

❑ दुलदुल विश्वास



इतना भारी बस्ता

पापा
इतना भारी बस्ता
क्यों होता है

इतनी ढेर किताबें
क्यों पढ़नी पढ़ती हैं
मैडम इतना होमवर्क
क्यों दे देती हैं

क्यों दुखती हैं
मेरी आँखें
ये सिर क्यों भारी रहता है

छोटी थी तो खेल-खेल में
आप सुनाते रोज़ कहानी
याद मुझे झट हो जाती थीं
बिना पढ़े ही सभी जुबानी

आज पढ़ाई में
फिर इतना
रटना क्यों होता है

मेरी आँखों पर चश्मा
चढ़ गया अभी से
सभी समझते हैं मैं चिपकी
रहती हूँ हरदम टी.वी. से

सोच-सोचकर
ये सब बातें
मेरा नन्हा मन रोता है

पापा,
इतना भारी बस्ता
क्यों होता है!

❑ श्याम सुशील
चित्र : विवेक

भागीदारों की जुबानी

अपने गाँव से भोपाल तक

मैं ज़िला रोहतक, हरियाणा से आया हूँ। मेरा घर गाँव बरवेता में है। हम 26 तारीख की सुबह 9.50 पर अपना लंच (दोपहर का खाना) और डिनर (रात का खाना) लेकर घर से चले। हम रोहतक 11.15 पर पहुँचे। बाद में सभी ज़िलों के बच्चे वहाँ आए। कुछ गाइड-अध्यापक भी साथ थे। हम रोहतक से 2.30 पर दिल्ली के लिए चले और शाम 5.50 पर दिल्ली पहुँचे। दिल्ली से 7.00 बजे भोपाल के लिए ट्रेन में बैठे और भोपाल अगले दिन प्रातः 8.00 बजे पहुँचे।

❑ **मनोज कुमार, बरवेता, रोहतक, हरियाणा**

रेलवे स्टेशन से आगे

26.12.97 को प्रातः 8.30 बजे हम भोपाल पहुँचे। भोपाल पहुँचने के बाद रेलवे स्टेशन पर जो बाल विज्ञान कांग्रेस का टेन्ट लगा था, उसमें हमने चाय का आनन्द लिया। फिर बस आने के बाद हम बस में बैठकर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के कीर्ति निकेतन भवन में आ पहुँचे। यहाँ आने के बाद पहले हमें टी.वी. हॉल में जाने को कहा। फिर बच्चों को कमरे दे दिए गए। उसके बाद हम दूसरे बच्चों से मिले जो दूसरी जगहों से आए थे। बाद में हम सब मिलकर सो गए।

❑ **यादराम, बिरोहल, झज्जर, हरियाणा**

कार्यक्रम की शुरुआत

28.12.97 की सुबह राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का शुभारम्भ हुआ। अलग-अलग राज्य के बच्चों को बुलाया गया। ये सभी बच्चे अपने राज्य की सांस्कृतिक वेश-भूषा में थे और बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन से पहले एक छोटे-से हवाई जहाज़ को उड़ाया गया जो कि सबको बहुत अच्छा लगा। तभी अचानक एक लड़की यह खेल देखते-देखते पास आ गई और जहाज़ उससे टकरा गया। उसे प्राथमिक उपचार के बाद आराम करने भेज दिया गया। फिर सभी बच्चों को टेन्ट में बैठाया गया। और गणमान्य व्यक्तियों ने बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन किया। बाद में बच्चों ने मैदान में परेड की। इसी के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

❑ **गरिमा वत्स, आठवीं, पानीपत, हरियाणा**



कुछ मज़ा मौसम का, कुछ मेले का

आज मैं अपनी दोस्तों के साथ रीजनल कॉलेज में नेशनल लेवेल पर विज्ञान मेला लगा है, वह देखने आई हूँ। आज का मौसम बहुत अच्छा है। चारों तरफ ठंडक है और सब तरफ कोहरा जमा हुआ है। प्रदर्शनी देखने में बहुत मज़ा आया। ऐसी प्रदर्शनी लगने से बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है। मुझे यह सब देखकर बहुत अच्छा लगा।

❑ रितु शर्मा, भोपाल, म.प्र.

मौसम और विज्ञान कांग्रेस

आज नगर में ज़्यादा कोहरा छा गया है। कोहरे के कारण लाइट भी बंद नहीं हो रही है। सभी छात्र-छात्राओं के चेहरे पर रौनक है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के मार्गों को सजाया गया है।

कमरा नं. 138 में एक छात्र ने कारखानों के बारे में चर्चा की। उसने कारखानों से निकलने वाले हानिकारक पदार्थों के बारे में कुछ बातें बताईं। फिर एक बच्चे ने पानी में रहने वाले जीवों के बारे में बताया। वहाँ पर अनेक जगह के लोग आए हुए थे। कार्यक्रम ज़ोरों पर चला।

❑ सुचिता, दसवीं, भोपाल, म.प्र.



कुछ अच्छा, तो कुछ बुरा भी

भोपाल काफ़ी अच्छी जगह है और ख़ासकर श्यामला पहाड़ी। और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान तो बहुत ही अच्छा है। यह कितना हरा-भरा है। हमारे रहने की व्यवस्था शांति निकेतन में की गई है। व्यवस्था सचमुच बहुत अच्छी है पर यहाँ ठंड बहुत ज़्यादा है। यहाँ जो मॉडलों की प्रदर्शनी व गतिविधि केन्द्र लगाए गए हैं, वो मुझे सबसे अच्छे लगे। एक और चीज़, पानी की व्यवस्था में कुछ कमी है और बाथरूम वग़ैरह साफ़ भी नहीं है। पर कुछ मिलाकर मुझे यह अनुभव बहुत अच्छा लगा।

❑ अपेक्षा, मंगलूर, कर्नाटक
(मूल अंग्रेज़ी से अनूदित)

वही शिकायत यहाँ भी

हमें रहने के लिए कीर्ति निकेतन में एक कमरा मिला है। एक पलंग और एक बिस्तर दिया गया है। पर एक समस्या है - पानी की। यहाँ पानी टायलेट (शौचालय) में नहीं मिलता और नहाने के लिए भी नहीं मिलता। इस समस्या से छुटकरा दिलाया जाना चाहिए।

❑ धर्मवीर, सुचान, सिरसा, हरियाणा

कुछ बातें तकनीकी सत्रों की

आज कोहरे से भरी सुबह को भी बच्चे, जो राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भाग लेने के लिए आए थे, मुस्कुराकर एक-दूसरे का परिचय प्राप्त कर रहे थे। कुछ देर बाद बाल विज्ञान कांग्रेस के बच्चे अपना शोध पत्र प्रस्तुत करने लगे। सबसे पहले हरियाणा के मनोज कुमार ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। फिर हरियाणा के ही एक बाल वैज्ञानिक यादराम ने कुछ चमत्कार दिखाकर सबका मन मोह लिया। उन्होंने 'चमत्कारों का सत्यानाश' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। हिमाचल के बाल वैज्ञानिकों ने विकलांगों के लिए एक छड़ी बनाई जिसकी कई विशेषताएँ थीं। जम्मू-कश्मीर के एक बाल वैज्ञानिक ने 'स्वस्थ भारत, खुशहाल भारत' विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस तरह आज के इस सत्र में कुल दस वैज्ञानिकों ने अपना शोध पत्र पढ़ा।

❑ अशोक जैन, ग्यारहवीं, भिवानी, हरियाणा

शोध की प्रेरणा

मैंने कई बार कई समारोहों में लोगों को भोजन बर्बाद करते देखा। टेबल पर खाना सजा देखकर उनकी लार टपकने लगती और वे ढेर-ढेर परोस लेते हैं। पर वे इतना खा नहीं पाते हैं, तो फेंक देते हैं। फिर कई लोग ज़रूरत से ज़्यादा खाना खा लेते हैं। यह उनकी सेहत के लिए भी अच्छा नहीं होता। मैंने सोचा कि अगर ये लोग अपने खाने का कुछ हिस्सा ऐसे लोगों के साथ बाँट लें जिन्हें दिन में एक वक़्त भी खाना मुहैया नहीं होता, तो देने वाले भी सुखी होंगे और पाने वाले भी। फिर मैंने यह भी देखा कि मेरी क्लास के कई छात्र अक़्सर पेट की गड़बड़ियों के कारण स्कूल नहीं आ पाते। मुझे लगा इसका कारण ज़रूर उनकी खाने की गड़बड़ आदतें होंगी। फिर मुझे हमारे एक शिक्षक ने एक ऐसे विज्ञान प्रोजेक्ट के बारे में बताया जिसमें कई छोटे विषय थे। उसमें मुझे "स्वस्थ भारत, खुशहाल भारत" नाम का विषय दिखा। मुझे लगा कि मैं अगर अपनी सोची हुई समस्याओं पर कुछ अध्ययन करूँ और उनके हल खोजने की कोशिश करूँ, तो वह इस विषय में आ सकता है। मैंने फिर अपनी टीचर से बात की। उन्होंने मेरी बात का समर्थन किया और मेरे शोध प्रोजेक्ट को नाम दिया - "संतुलित भोजन, स्वस्थ आदतें और खुशहाल भारत"।

❑ सौम्या पी., कर्नाटक
(मूल अंग्रेज़ी से अनूदित)

प्रदूषण की फ़िक्र, और ठोस कदम भी

मैंने हरियाणा के सिरसा से आए धर्मवीर से बात की। ये अपना एक मॉडल बनाकर लाए हैं और एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। इसका शीर्षक है - "इम्प्रूव्ड टेक्नोलॉजी फॉर वेस्ट डिस्पोज़ल ऑफ़ वाटर"। इससे घरों और शिविर का पानी साफ़ होता है। फैक्ट्री का पानी जो फसलों को ख़राब करता है, वह पीने के योग्य बना सकते हैं।

❑ राजेश शर्मा, नौवीं, भोपाल, म.प्र.

मॉडलों का आनन्द भी, मेल-मिलाप का भी

जो बच्चे पहले दो दिन अपने शोध पत्र प्रस्तुत कर चुके थे उन्होंने तीसरे दिन अपने चार्टों और मॉडलों की प्रदर्शनी लगाई। यह बहुत ही अच्छी थी। प्रदर्शनी में कई बच्चों ने अपने राज्य, शहर, गाँव की परेशानी को अपने भावों के द्वारा प्रस्तुत किया। फिर दोपहर के खाने के बाद बच्चों ने हवाई जहाज़ के मॉडल के उड़ान का आनन्द लिया। इसके बाद ऑडिटोरियम में हम रेडियो (आकाशवाणी) के अध्यक्ष से मिले। और अपने-अपने राज्य की विशेषता रेडियो में बताई।

❑ गरिमा शर्मा, पानीपत, हरियाणा

गतिविधि कॉर्नर : ऑरिगैमी के मज़े

काग़ज़ के चौकोर रंग-बिरंगे टुकड़ों से तरह-तरह की आकृतियाँ व खिलौने बनाना ऑरिगैमी कहलाता है। कमरा नं. 43 में ऑरिगैमी चल रही है। टोपी, घर, पक्षी, सितारा, फूल, मछली आदि यहाँ लगभग तीस बच्चे बनाना सीख रहे हैं।





अभी थोड़ी देर पहले एक सर ने गुलाटीराम नामक खिलौना बनाना सिखाया। इसका नाम सुनकर बच्चों को बहुत हँसी आई। इस खिलौने की विशेषता यह थी कि यह बार-बार बिना धक्का खाए गुलाटी लगाता रहता है। सभी बच्चे इन खिलौनों से खेल रहे हैं और मज़ा कर रहे हैं।

❑ अवनि श्रीवास्तव, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

उपयोगी और मज़ेदार

विज्ञान मेले में इतनी उपयोगी और मज़ेदार चीज़ें देखकर मज़ा आ गया। सबसे बड़ी इच्छा साँप देखने की थी पर वह पूरी न हो पाई क्योंकि हम यहाँ देर से पहुँचे। हमने यहाँ विज्ञान के ऐसे प्रयोग किए जो रोज़मर्रा के जीवन में कम ख़र्चे पर किए गए थे। फिर अपने शरीर के भाग व हड्डियों को रंगा और पहचाना। मेरी यही इच्छा है कि काश मैं भी इसमें पहले से भाग ले पाती।

❑ नमिता शुक्ला, बारहवीं, भोपाल, म.प्र.



चमत्कारों से मुक्ति

बाल विज्ञान कांग्रेस के कमरा नं.15 में मेडीकल कॉलेज, मंगलूर से आए नरेन्द्र जी ने कुछ ऐसे प्रयोग करके दिखाए जिसमें चमत्कारों के बारे में बताया कि वे कैसे किए जाते हैं। जैसे कोई बाबा हवा में हाथ घुमाकर भभूत ले आते हैं। पर असल में उनका हाथ ख़ाली नहीं होता। चावल बनाने के बाद जो पानी बचता है उसे सुखाने के बाद उसके चूरे को हाथ में रगड़ते हैं जिससे भभूत तैयार होती है। इसे साधु बाबा जादू कहकर लोगों को ठगते हैं।

❑ आरती गाँधी, एस.ओ.एस. बालग्राम, भोपाल, म.प्र.



चित्रकला के रंग

चित्रकला वाले कमरे में भोपाल के सरोजिनी नायडू स्कूल और नवीन हाई स्कूल और कमला नेहरू हाई स्कूल के छात्रों ने चित्र बनाए। काग़ज़, पेंसिल, रंग, सभी यहाँ पर उपलब्ध हैं। लड़कियाँ अपनी मर्ज़ी से चित्र बना रही थीं। दीवार पर सजाए गए रंगीन चित्र सुन्दर लग रहे थे। बच्चों ने अधिकतर प्राकृतिक दृश्य बनाए।

❑ राजीव नामदेव, सातवीं, भोपाल, म.प्र.



रोते-हँसते चेहरे

सबीना मैडम भोपाल की ही हैं। यह पेंटिंग करना सिखा रही हैं कि जो बच्चा रो रहा है, उसे रोते ही दिखाएँ। यानी कि भाव बिल्कुल वैसे ही लाएँ जैसे वो कर रहा है। बच्चों को बहुत अच्छा लगा।

❑ प्रीति शर्मा, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

माथापच्ची में भी मौज

माथापच्ची में तरह-तरह की चीज़ें बनाईं जिसमें मज़ा आ रहा था। कोई नक्शा बना रहा था, कोई काग़ज़ के खेल कर रहा था। दो लड़कियाँ इण्डिया का नक्शा बना रहीं थीं। बच्चे एन्जॉय कर रहे थे।

❑ धीरेन्द्र, नौवीं, भोपाल, म.प्र.



कुछ नाराज़ी भी

29 तारीख़ की रात के सांस्कृतिक कार्यक्रम से बच्चे आज नाराज़ थे। कार्यक्रम की शुरुआत आकाशवाणी और भारत सरकार के गीत और नाटक प्रभाग से हुई, जिन्हें बच्चों ने काफ़ी पसंद किया। बाद में तीन घंटे तक ये लोग स्टेज को घेरे रहे। जिससे आसाम, पंजाब, केरल, बंगाल, महाराष्ट्र तथा और भी राज्य के बच्चे अंत तक तैयार बैठे रहे पर उनके कार्यक्रम पेश नहीं हो पाए।

❑ अवनि श्रीवास्तव, प्रीति शर्मा, भोपाल, म.प्र.



भाषा दोस्ती की दीवार नहीं

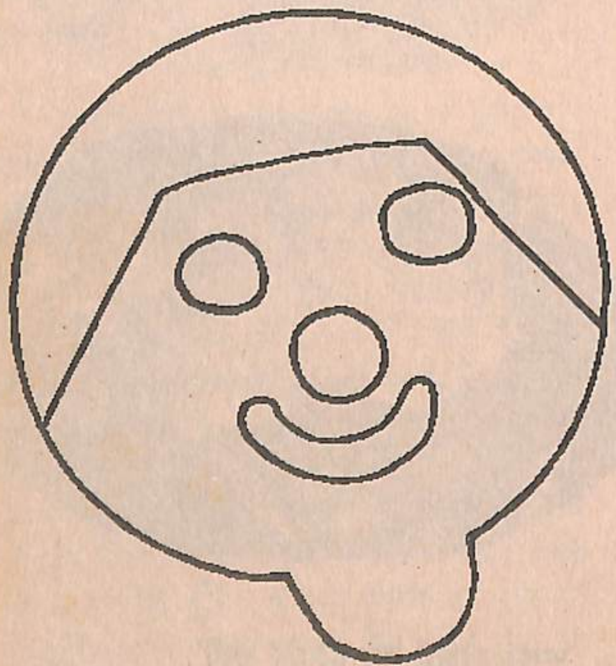
विज्ञान कांग्रेस में हमने विभिन्न राज्यों के बच्चे देखे। शाम को मैंने चाय लेने के बाद इनसे मिलने का निर्णय किया। मेरे कमरे के पास मिज़ोरम के बच्चों का कमरा था। मैं उनके कमरे में गया। वे अंग्रेज़ी भाषा बोल रहे थे। मैं सही ढंग से अंग्रेज़ी नहीं बोल सकता। फिर भी मैंने उन मिज़ो साथियों के साथ काफ़ी देर बातचीत करी। एक का नाम सांगा था, दूसरे का नाम हैनरी था। उन्होंने मुझे अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताया और अपने अध्यापकों से भी मिलाया। इसके बाद मैं उत्तर प्रदेश, मणिपुर, प. बंगाल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर से आए बच्चों से भी मिला।

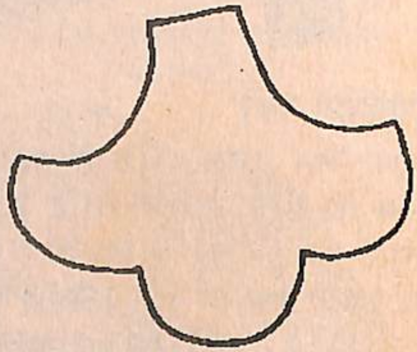
❑ विकास सिंहमार, जीन्द, हरियाणा

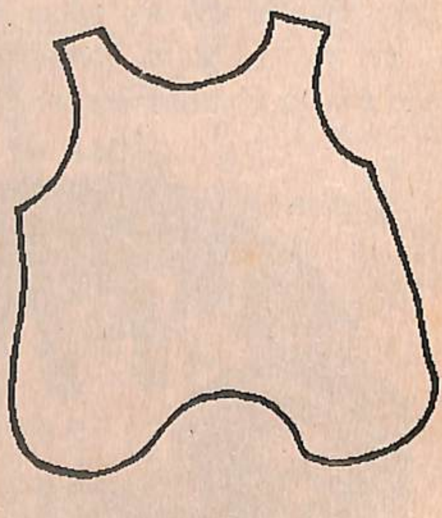
(फोटो : दुलदुल विश्वास, कविता सुरेश)

जोकर

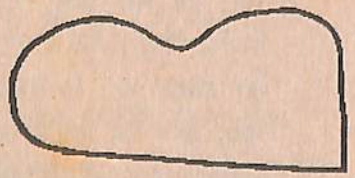
यह बहुत ही मज़ेदार खिलौना है। इसके हाथ, पैर, धड़, सिर सब अलग-अलग तुम्हारे पास होंगे। और तुम जब चाहो, जैसी चाहो आकृतियाँ बनाकर खेल सकते हो। अगर तुम 'बड़े' हो गए हो, यानि छठवीं कक्षा में पहुँच गए हो तो अपने छोटे, नन्हे-मुन्ने भाई-बहनों को बनाकर दो।

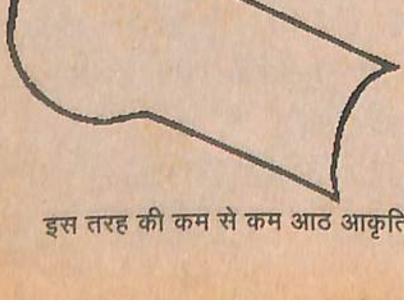




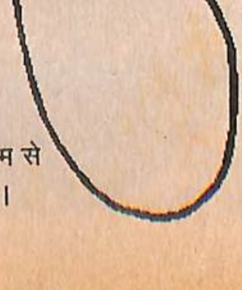


इस तरह की कम से कम दो आकृति काटो।





इस तरह की कम से कम आठ आकृति काटो।

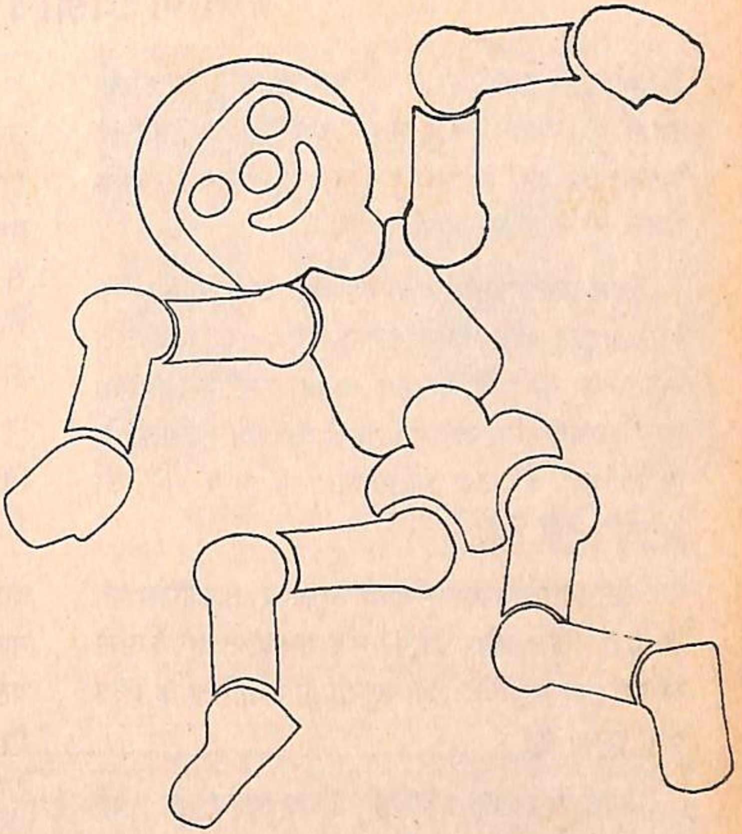


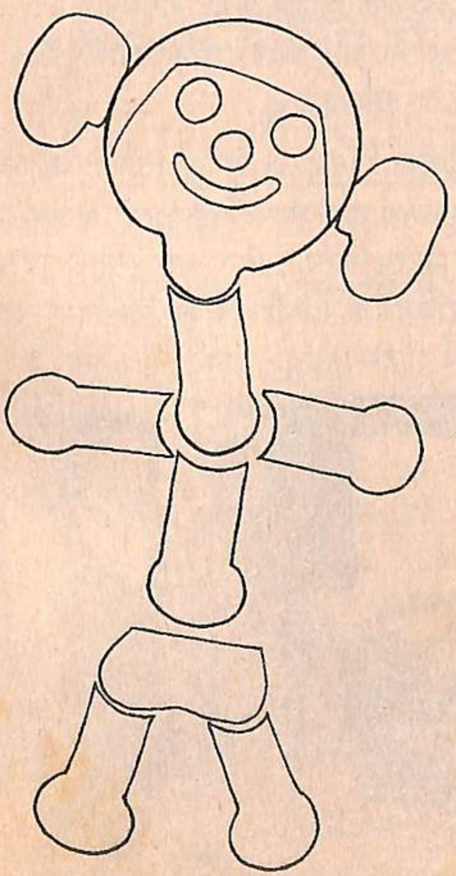
इस तरह की कम से कम दो आकृति काटो।

इसके लिए मोटी कार्डशीट या पुट्ठा लेना होगा जिससे ज़्यादा दिन तक खिलौना बना रहे। इसके अलावा कैंची और पेंसिल की ज़रूरत पड़ेगी।

करना सिर्फ़ इतना ही है कि यहाँ दी हुई आकृतियों को मोटी कार्डशीट पर उतारकर काट लो। इनको अलग अलग रंगों में या डिज़ाइन बनाकर सजा लो।

फिर इन आकृतियों से अपना जोकर बनाओ। और देखो कैसे–कैसे नाचता है यह जोकर।





अगर तुम्हें बहुत मोटा और मज़बूत काग़ज़ न मिल पाए तो तुम अपने कम मोटे काग़ज़ को भी मज़बूत बना सकते हो। इसके लिए काग़ज़ के दोनों तरफ एक-एक परत पुराने कपड़े की और फिर एक-एक परत काग़ज़ की चिपका लो।

ग्रामीण विज्ञान प्रदर्शनी

पिछले कुछ सालों से म. प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल राज्य स्तरीय ग्रामीण विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन करता आ रहा है। इसके लिए आवश्यक धनराशि मंडल ही उपलब्ध कराता रहा है।

इस प्रतियोगिता में ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं मान्यता प्राप्त अशासकीय हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल के नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के नियमित छात्र-छात्राएँ भाग लेते हैं। शहरी क्षेत्र की शालाओं के विध्यार्थियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति नहीं होती है।

प्रतियोगिता पहले ज़िला स्तर पर आयोजित की जाती है। ज़िला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले मॉडल (प्रादर्श) को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चुना जाता है।

भाग लेने वाले प्रतियोगियों को विषय चुनने की स्वतंत्रता रहती है। लेकिन बनाए गए मॉडलों का कक्षा नौ से बारह तक के विज्ञान पाठ्यक्रम के किसी वैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित होना आवश्यक है।

वर्ष 1997 में चौथी राज्य स्तरीय ग्रामीण विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के 45 ज़िलों में से 35 ज़िलों ने भाग लिया। ज़िला स्तर पर प्रथम आए 37 प्रादर्शों को राज्य स्तरीय प्रदर्शनी के लिए चुना गया। राज्य स्तरीय ग्रामीण विज्ञान प्रदर्शनी 20 से 22 दिसम्बर, 97 तक आंचलिक विज्ञान केंद्र, भोपाल में लगाई गई। इस प्रदर्शनी के आयोजन की ज़िम्मेदारी म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद और आंचलिक विज्ञान केंद्र ने संयुक्त रूप से उठाई थी।

प्रदर्शनी में कुल 39 मॉडलों को रखा गया था। इनमें 37 ज़िला स्तर पर चुनकर आए थे। जबकि 2 सागर और होशंगाबाद ज़िले के थे, इन ज़िलों ने प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था।

ग्रामीण छात्र-छात्राओं द्वारा जो मॉडल बनाए गए, उनमें प्रमुख थे – अग्निसूचक यंत्र, बाढ़ सूचक यंत्र, ग्रामीण फ्रिज, माइक्रोप्रोजेक्टर, भूकम्पमापी, ऊर्जा बचत के लिए बनाए गए विभिन्न संयंत्र, बेकार मटके से बना ओवन, बिजली से चलने वाला ट्रेक्टर, ग्रामीण शीतगृह, गोबर गैस से बिजली का उत्पादन, इलेक्ट्रॉनिक हारमोनियम आदि।

चार मॉडलों को पुरस्कार के लिए चुना गया। दो मॉडलों को संयुक्त रूप से तृतीय पुरस्कार दिया गया।

शा. उ. मा. विद्यालय बिरसा, बालाघाट की दीपाली बिसेन व नीलम हाडगे द्वारा बनाए गए माइक्रोप्रोजेक्टर को प्रथम पुरस्कार मिला। उन्होंने यह प्रोजेक्टर फ्यूज़ बल्ब और कार्डबोर्ड के डिब्बे से तैयार किया है। इसकी लागत केवल 100 रुपए आती है। जबकि बाज़ार में यह लगभग 850 रुपए का है। इस माइक्रोप्रोजेक्टर से सरलता से चित्रों को दिखाया जा सकता है।

तेंदूखेड़ा, दमोह के विवेक त्रिपाठी को ऊर्जा बचाने व ऊर्जा उत्पादन के विभिन्न संयंत्रों के निर्माण के लिए द्वितिय पुरस्कार दिया गया। तीसरा पुरस्कार पचोर, राजगढ़ के राकेश हाड़ा को दिया गया। राकेश ने विद्युत मोटर नियंत्रक उपकरण बनाया है। इस



दीपाली और नीलम अपने माइक्रोप्रोजेक्टर के साथ।

उपकरण में ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया है, जिससे कुएँ व नहरों से पानी खींचने वाली विद्युत मोटर के फुटवॉल्व से पानी नीचे चले जाने पर मोटर अपने आप बंद हो जाती है। जबकि आमतौर पर पानी की सतह नीचे उतर जाने पर यदि ख़ाली मोटर चलती रहे तो कई बार वह जल जाती है।

हातौद, इन्दौर के लोकेश जैन को भी भूकम्पमापी यंत्र के लिए तृतीय पुरस्कार दिया गया।

इस प्रतियोगिता में छात्रों की रुचि को देखते हुए म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद इस बात पर विचार कर रही है कि इसे और प्रोत्साहित करने के लिए क्या कार्यक्रम बनाए जाएँ।

(फोटो म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के सौजन्य से।)



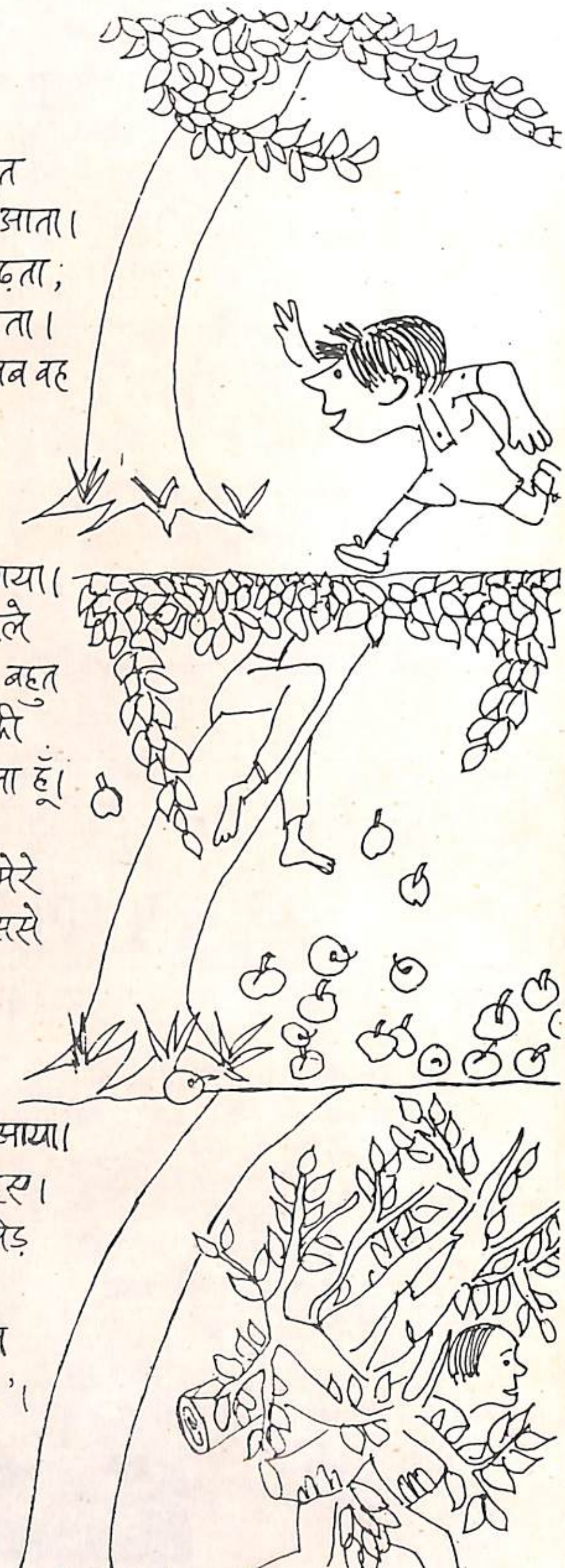
भाऊखेड़ी, सीहोर के राजेश मोहनिया अपने ओवन के साथ। यह ओवन बेकार हो गए मटके से बनाया गया है। एल्यूमीनियम से बने ओवन की तुलना में यह अधिक तापरोधी होता है। इसमें बाटी या कोई भी अन्य खाद्य पदार्थ जल्दी और अच्छे ढंग से सिकता है। इसकी लागत केवल 20 रुपए है।

दानी पेड़

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज़ पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखों से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ छिपा-छुपी खेलता। जब वह थक जाता तो वह पेड़ की छाँव में सो जाता।
लड़का भी पेड़ से बहुत प्यार करता था।
पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का अब जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा 'मुझे पैसों की ज़रूरत है। मैं बहुत सी चीज़ें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?'
पेड़ ने कहा 'पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाज़ार में बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जायेंगे।'
लड़का सब फल तोड़ कर ले गया।
पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। 'मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?' उसने पेड़ से कहा।
पेड़ ने कहा 'घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखें काट कर उनसे घर बना लो'।
युवक पेड़ की सब शाखें काट कर ले गया।
पेड़ का बस तना बचा रह गया।
पेड़ अभी भी खुश था।



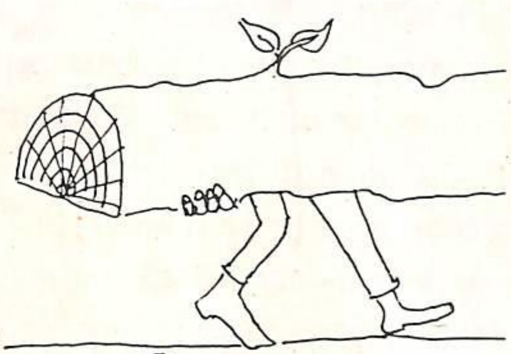
बहुत साल बीत गए। लड़का अब अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था। एक दिन वह पेड़ के पास आया और बोला 'मुझे व्यापार करने सात-समुद्र पार जाना है। मुझे एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?'



पेड़ ने कहा 'नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।'

आदमी ने पेड़ का तना काट कर नाव बनाई

पेड़ अब भी खुश था।



पेड़ का अब केवल ठूंठ बचा था।

इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। वह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा 'बेटा मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परन्तु अब मेरे पास बचा ही क्या है। मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखें नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूं?'



बूढ़े ने कहा 'तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखों से झूलने की नहीं है। तने पर चढ़ने का दम अब मुझ में नहीं रहा। मैं बहुत थका हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।'

'तो फिर आओ और मेरे ठूंठ पर शांति से बैठो' पेड़ ने कहा।



बूढ़ा ठूंठ पर बैठ कर सुस्ताने लगा।

पेड़ अब भी बहुत खुश था।

(मूल कहानी 'दी गिविंग ट्री' शेल सिलवरस्टाइन)

प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

लो गुब्बारे वाला आया

लाल, पीले, हरे, बैंगनी,
तरह तरह के ले गुब्बारे
लो गुब्बारे वाला आया।

भाँति भाँति के लिए मुखौटे
कोई बड़े, कोई हैं छोटे
कोई बिल्ली कोई बन्दर,
कोई भालू मस्त कलंदर
सीटी पीं पीं बजा बजाकर
सबको अपनी ओर रिझाया।
लो गुब्बारे वाला आया।



फ़ोटो : के.आर. शर्मा

कभी बजाता डम-डम बाजा,
सबको कहता आ जा आ जा,
कभी बाँसुरी तान सुनाता
कभी ज़ोर से गाना गाता
कभी उछलता, कभी कूदता
सब बच्चों के मन को भाया
लो गुब्बारे वाला आया।

टिंकू, पिंकू, मीना, डबलू
चुन्नू, मुन्नू, बबली, बबलू
आओ बच्चो लो गुब्बारे
सब आ जाओ पास हमारे
सीटी बजी ले लो गाड़ी
मोटर, साइकिल ले लो दाढ़ी
सब बच्चों ने शोर मचाया
लो गुब्बारे वाला आया।

❑ नरेन्द्र नैथानी 'चंद्र'

आदिवासी क्रांतिकारी

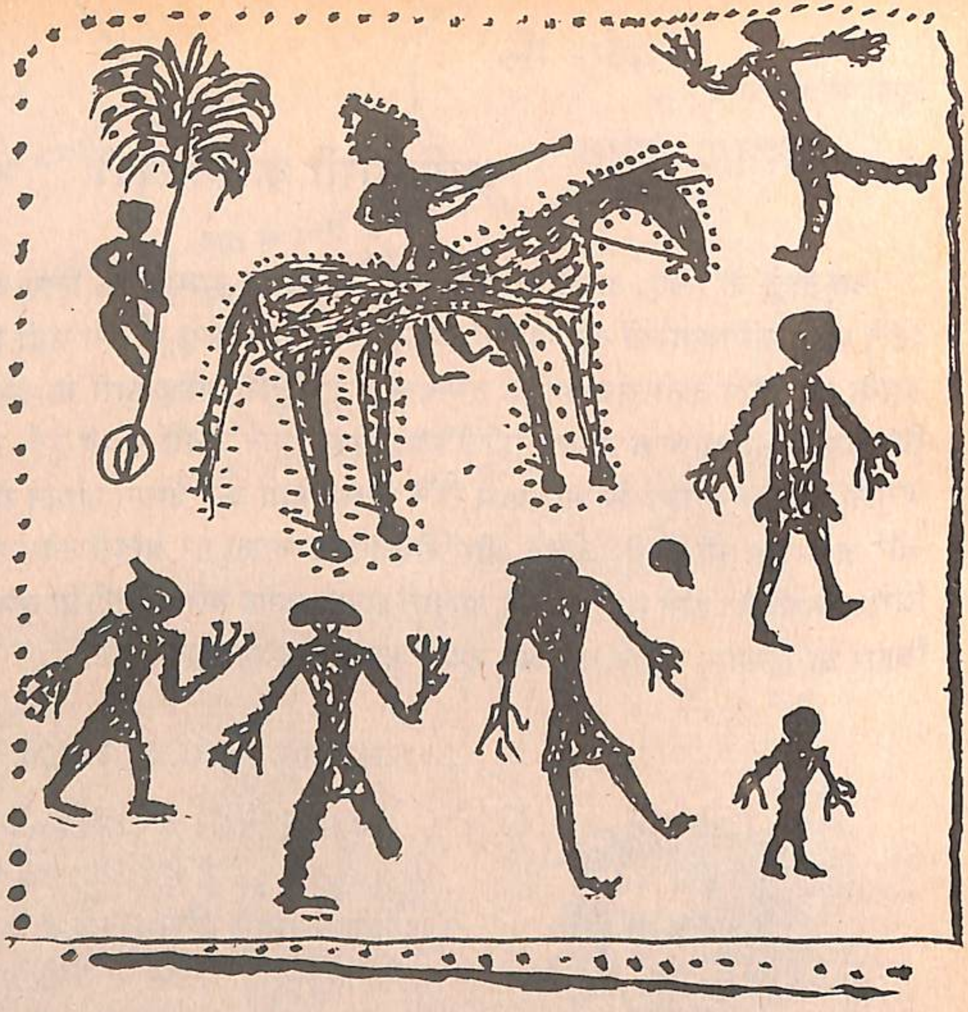
आज़ादी के लिए, अपने हक़ों के लिए और मान-सम्मान के लिए जान की बलि चढ़ा देने वाले वीर क्रांतिकारियों की गाथाएँ हमारे देश के इतिहास में भरी पड़ी हैं। अंग्रेज़ी राज और उसके भी पहले देशी राजाओं के दमन और ज़मींदारों, साहूकारों के अत्याचार से दुखी जनता ख़िलाफ़त की आवाज़ उठाती रही है। यह ख़िलाफ़त शहरों में भी हुई, गाँवों में भी और सुदूर जंगलों में भी। जंगलों के आसपास रहने वाले लोगों का जीवन जंगल से पूरी तरह जुड़ा रहता है। और जब-जब भी उनके जीवन और जीवनदाता जंगल पर बाहरी लोग बुरी नज़र डालते हैं, वो विरोध करते हैं। इसी तरह की दो अलग-अलग जगह की कहानियाँ तुम इस बार पढ़ोगे। पहली बिहार के सन्थाल परगने की और दूसरी मध्यप्रदेश के बस्तर की।

सन्थाल परगना का महाविद्रोह



उसी ज़माने में एक कलाकार द्वारा बनाया गया सिद् हो का चित्र

बंगाल, बिहार व उड़ीसा की ब्रिटिश दीवानी की शुरूआत 1765 में हुई और तब इस इलाक़े के आदिवासियों के राजनैतिक ढाँचे को इसने काफ़ी प्रभावित किया। 1769 में अंग्रेज़ों ने छोटा नागपुर क्षेत्र में भी प्रवेश किया और नागपुर और रामगढ़ के राजाओं ने उनका आधिपत्य स्वीकार कर लिया। 1780 में दक्षिण बिहार के इलाक़े में सैनिक कलेक्टरी स्थापित की गई। इस दौर में राजाओं को आंतरिक मामलों को सम्हालने की छूट तो दी जाती थी। परन्तु असल में ठेकेदार और महाजन ही यहाँ के असली राजा बन बैठे थे। छोटा नागपुर क्षेत्र में बाहर से आए व्यापारियों ने मैदानी इलाक़ों से आ-आकर बसना शुरू कर दिया था। इससे गाँवों में रहने वाले मूल निवासियों की स्थिति अपने ही घर में किराएदारों जैसी हो गई। इसके ख़िलाफ आदिवासियों ने कई बार विरोध किया। 1831-32 में मुंडा जाति की अगुवाई में एक बड़ा विद्रोह हुआ जिसे कोल विद्रोह के नाम से जाना जाता है। उसके बाद 1834 में ही अंग्रेज़ों ने एक कानून बनाकर यह इलाक़ा ब्रिटिश गवर्नर जनरल के अधीन कर लिया।



सन् 1855 में 30 जून को सन्थाल परगना के भगनाडिही गाँव के मैदान में एक सभा हुई। इसमें सन्थाल नेता सिद्हो और कानू भगत की पुकार पर दस हज़ार सन्थालों ने अंग्रेज़ सरकार, व्यावसायिओं, महाजनों और ज़मींदारों के दमनकारी शासन की जगह स्वाधीन सन्थाल राज्य स्थापित करने की शपथ ली। इसका कारण था कि ज़मींदार, मुनीम, साहूकार, महाजन, पुलिस, नायब और अदालती कर्मचारियों, सब मिलकर सन्थालों पर बहुत अत्याचार कर रहे थे। इन लोगों ने बलपूर्वक उनकी सम्पत्ति हड़प लेना, सन्थालों का अपमान करना, मारपीट करना जैसे कई तरीकों से उनको दबाकर रखने की व्यवस्था चला रखी थी। 100 रुपए उधार लेने पर ब्याज के रुप में 50 रुपए से लेकर 500 रुपए तक वसूल करते थे। सन्थालियों को कर्ज़ के जाल में फँसाकर व्यापारी सारा अनाज ब्याज के रूप में हासिल कर लेते थे। इस काम में पुलिस उनकी मदद करती थी। पुलिस ही इन भीतरी इलाक़ों के असली शासक बन गए थे।

भगनाडिही के मैदान में हुई इस सभा में कुम्हार, तेली, जुलाहे, चमार, डोम आदि कई सम्प्रदायों के लोगों ने इस लड़ाई में साथ देने की घोषणा की। उसी दिन एक विशाल समूह ने कलकत्ता की तरफ बढ़ना शुरु किया। रास्ते में उनके प्रहार से कई अत्याचारी महाजन और रास्ता रोकने की कोशिश करने वाले पुलिस के दरोगा आदि ख़त्म हो गए। इससे पहले सन्थालियों ने अपनी परेशानियों को सुलझाने के लिए कई अर्ज़ियाँ स्थानीय प्रशासन को दी थीं। पर स्थानीय शासन ने लगातार उनकी अनदेखी की। इसलिए अब कलकत्ता जाकर बड़े साहब के पास अपनी शिकायतें दर्ज कराना ही इस समूह का उद्देश्य था। इस जुलूस ने 1 जुलाई को कुख्यात दरोगा महेश की हत्या कर दी और इसके साथ ही यह सन्थालों के 'हूल' (विद्रोह) में बदल गया। इस हूल का लक्ष्य था ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज को उखाड़ फेंकना। इसके बाद इन विद्रोहियों ने कई और अत्याचारी दरोगा, महाजनों को ख़त्म कर दिया।

सन्थालों के इस विद्रोह को रोकने के लिए मेजर बारोज ने बहुत कोशिशें कीं। बहुत सारी सेना और कई हाथी सवार सन्थालियों से लड़ने पहुँचे। लेकिन पाँच घण्टे की घमासान लड़ाई के बाद वे बहुत सारी लाशें छोड़कर भाग खड़े हुए।

उसके बाद सन्थालियों ने पाकुड़ का रास्ता रोका। जान बचाने के लिए अंग्रेज़ों ने पाकुड़ के किले में पनाह

ली थी। 1855 की 12 जुलाई को सिद् हो और कानू भगत की अगुवाई में सन्थालियों ने पाकुड़ के महल पर कब्ज़ा कर लिया। वहाँ से वे मुर्शिदाबाद की ओर बढ़े। इसी समय साथ के बीरभूम ज़िले में भी अंग्रेज़ी शासन पूरी तरह नाकाम हो चुका था। जब सन्थाल विद्रोह अपने चरम पर था तब बंगाल के बीरभूम ज़िले से लेकर बिहार के भागलपुर ज़िले तक के पूरे भाग में अंग्रेज़ी शासन लगभग न के बराबर हो गया था।

अंग्रेज़ी शासन लगातार घुड़सवार, पैदल, हाथीवाहिनी और तोप सेना की मदद से भारत के पूर्वी क्षेत्र में अपनी रक्षा करने की कोशिश में लगा था। लेकिन इन कोशिशों के विफल हो जाने के बाद 10 नवम्बर 1855 को अंग्रेज़ों ने सैनिक कानून जारी करके मुर्शिदाबाद व बीरभूम से लेकर भागलपुर तक का शासन का काम सेना के सुपुर्द कर दिया।

उसके बाद सेना के हाथों इस इलाके में बेहद खूनख़राबा हुआ। इसके बारे में एक अंग्रेज़ लेखक हंटर ने अपनी किताब 'एनल्स ऑफ़ रूरल बेंगॉल' में फ़ौज के एक मेजर के ये शब्द लिखे हैं —

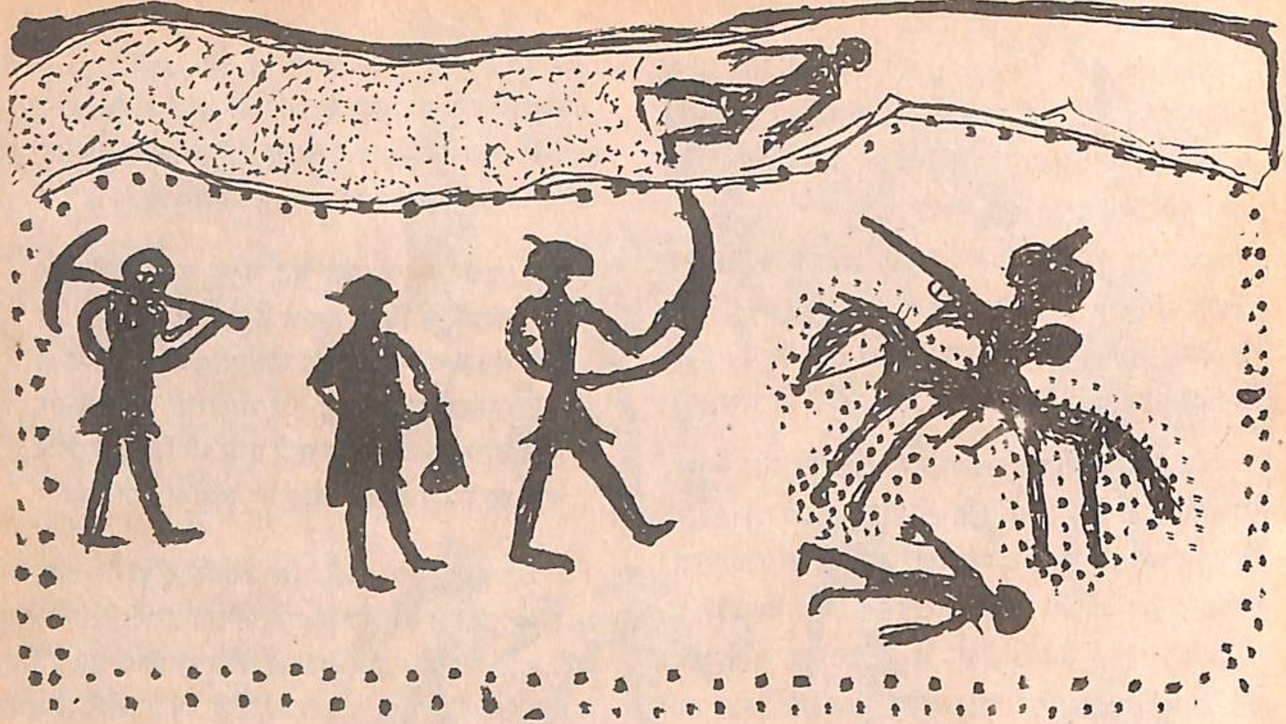
'हमने जो किया वह कोई युद्ध नहीं था। आत्मसमर्पण किसे कहते हैं, सन्थाल जानते ही नहीं थे। जब तक उनके माँदल बजते रहते थे वे डटे रहकर युद्ध करते हुए गोलियों के शिकार होते जाते थे। हमारी सेना में एक भी सिपाही ऐसा नहीं था जिसे अपने किए पर शर्म न आती हो।'

1857-58 तक चले इस महाविद्रोह के अलावा भारत के किसी भी जनसंग्राम में एक साथ इतने लोग नहीं मारे गए। एक अनुमान के मुताबिक 30 से 50 हज़ार विद्रोही इसमें इकट्ठा हुए थे और उनमें से कम से कम 15 से 20 हज़ार सन्थाल मारे गए।

बस्तर का भुमकाल विद्रोह

सन् 1910 में बस्तर में इंद्रावती के तट पर हुए सशस्त्र विद्रोह का कारण था, ब्रिटिश सरकार का दमन और उनके राजा का बाहर से आने वालों के सामने असहाय हो जाना। जिससे बाहर से आने वाले व्यापारी, ठेकेदार, सामंत आदि ने यहाँ के मूलनिवासियों का शोषण करना शुरू कर दिया था। साथ ही बस्तर में ईस्ट इंडिया कम्पनी सरकार ने 1853 में अपने पैर फैलाना शुरू कर दिए थे। अंग्रेज़ों ने विभिन्न अधिकारी, पटवारी और पुलिस तैनात करके पूरे बस्तर को अपने शिकंजे में जकड़ लिया। आदिवासी और वन दोनों का जीवन एक दूसरे पर निर्भर होता है। लेकिन जब 1908 में ब्रिटिश सरकार ने जंगलों को 'रिज़र्व फॉरेस्ट' यानि सुरक्षित वन घोषित कर दिया तो, इन वनों में रहने वाले आदिवासियों को यूँ लगा मानो उन्हें अपने ही घर से बाहर कर दिया गया हो। इन लोगों को जीवन के लिए वनों से ही सारी ज़रूरी चीज़ें मिलती थीं। लेकिन सरकार के नियमों ने आदिकाल से चली आ रही इस परम्परा को तोड़ दिया। अब वे जंगल से अपने लिए लकड़ी नहीं ला सकते थे। जबकि पहले उन्हें जितनी लकड़ी चाहिए थी वो बिना पेड़ काटे मिल जाती थी। उधर सरकार ने नियम कानून बनाकर जंगल से लकड़ी व्यापारियों को बेचना शुरू कर दी। और उस लकड़ी से फर्नीचर और रेलवे कोचों के स्लीपर बनने लगे।

इन कारणों से बस्तर के लोगों में गुस्सा बढ़ता रहा और अन्त में उसने एक बड़े विद्रोह का रूप ले लिया। इसे भुमकाल विद्रोह के नाम से जाना जाता है। यह विद्रोह कुछ चन्द लोगों के ख़िलाफ नहीं था, बल्कि ब्रिटिश राज के साथ-साथ सरकारी अमले, सूदखोर, शोषकों, खाकी वर्दीधारी लोगों के भी ख़िलाफ़ था।



6 फ़रवरी 1910 का दिन विद्रोह के लिए तय किया गया था। इस क्रांति के संदेश के रूप में 'लाल मिर्च' गाँव-गाँव पहुँचाई गई। ठीक उसी तरह जैसे 1857 की क्रांति के समय रोटी और कमल गाँव-गाँव में पहुँचाए गए थे। पूरे बस्तर को अंग्रेज़ों से मुक्ति पाने के लिए इस विप्लव का संदेश लालमिर्च, मिट्टी, धनुष-बाण पहुँचाकर दिया गया।

सन् 1909 में दशहरा उत्सव में नेतनार के गुण्डाधूर को इस भुमकाल विद्रोह का नेता चुना गया। 46 अलग-अलग परगनों में अलग -अलग लोगों को इसकी ज़िम्मेदारी दी गई। इस विद्रोह की तैयारी लगभग नौ माह तक गुपचुप तरीके से होती रही। गाँव-गाँव में बैठकें हुईं, लोगों को तैयार किया गया। वे सभी लोग जो ब्रिटिश सरकार के दमन और ज़मींदारों, साहूकारों के अत्याचार से परेशान थे इस विद्रोह में शामिल होते गए।

इस विप्लव की योजना बनाते समय तय किया गया कि किस तरह 'स्वतंत्र क्रांतिकारी सरकार' की स्थापना की जाएगी। इसके लिए जो करना था वो था

- साम्राज्यवादी शासकों को पकड़ा जाना।
- टेलाफोन और तार लाइनों को उखाड़ दिया जाना।
- डाक घरों और डाक पेटियों को नष्ट करना।
- सड़क मार्गों पर बाधाएँ खड़ी करना।
- अधिकारियों और अफ़सरों को बंदी बनाना या मार डालना।

जगदलपुर में 6 फ़रवरी को 'बेगार' के ख़िलाफ़ माड़िया जाति के लोगों ने प्रदर्शन किया और बाज़ार लूट लिया। उसी दिन दीवान पंडा बैजनाथ को इस विद्रोह की ख़बर हुई, और वह सतर्क होकर भाग निकला। विद्रोहियों की दीवान को पकड़ने की योजना कामयाब नहीं हो सकी। 13 फ़रवरी तक पूरे बस्तर में विद्रोह की आग फैल गई। उस समय बस्तर 84 परगनों में बँटा हुआ था। उसमें से 46 परगने पूरी तरह विद्रोह में शामिल थे। क्रांतिकारियों ने अपनी योजना के अनुसार गीदम नगर पर अधिकार कर लिया। गीदम और उसके आसपास के कई नगरों पर विद्रोहियों का कब्ज़ा हो गया। 6 फ़रवरी से 12 फ़रवरी तक महल को छोड़कर राजधानी जगदलपुर भी विद्रोहियों के कब्ज़े में थी।

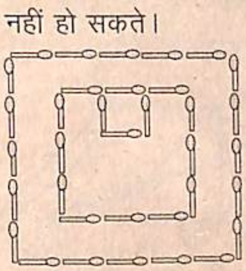
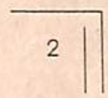
सात दिन बाद अंग्रेज़ी सेना पंजाबी बटालियनों के साथ बस्तर में विद्रोह दबाने आ पहुँची। अंग्रेज़ कमांडर ने गाँवों को लूटने और अच्छी तरह सबक सिखाने का हुक्म दिया। 16 फ़रवरी की घटना तो भुमकाल विद्रोह के समय की सबसे दुखद घटना है। इस दिन इन्द्रावती नदी के दक्षिण तट पर अंग्रेज़ सेना के सिपाही थे तो दूसरी ओर हज़ारों क्रांतिकारी। क्रांतिकारियों के पास लड़ने के लिए धनुष बाण थे तो दमनकारी अंग्रेज़ सिपाही गोली-बारूद लिए हुए थे। गोलियों की बाढ़ ने हज़ारों की जान ली। बचे हुए घायल लोगों ने जंगलों में जाकर शरण ली। इस लड़ाई में क्रांतिकारियों के कई अगुवा मारे गए जिससे उनका दल कमज़ोर हो गया। गुण्डाधूर भी घायल हो गया। उसे उसके साथियों ने छुपा लिया।

कुछ ही दिनों में ठीक होकर गुण्डाधूर ने फिर बिखरे लोगों को इकट्ठा किया। लेकिन अब अंग्रेज़ सतर्क हो गएथे। उन्होंने क्रांतिकारियों के भेद जानने के लिए लोग तैनात कर दिए थे। 25 फ़रवरी को अंग्रेज़ी फौज ने फिर से जुट रहे क्रांतिकारियों को उलनार पहाड़ी पर घेर लिया। सैंकड़ों लोग बंदी बनाए गए। लेकिन तब भी वे गुण्डाधूर को नहीं पकड़ सके। इसके बाद वो जंगल में जाकर छिप गया जहाँ से अंग्रेज़ फौज उसे कभी भी नहीं पकड़ सकी। बस्तर के लोकगीतों में भुमकाल विद्रोह के जो गीत गाए जाते हैं उनमें गुण्डाधूर की वीरता का वर्णन होता है।

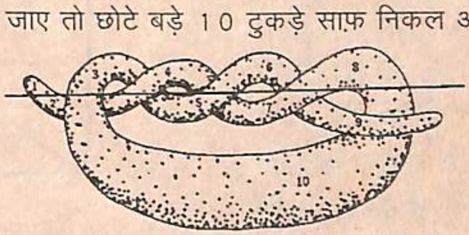
आगे लगभग चार साल तक अंग्रेज़ सेना बस्तर में कहर ढाती रही। महान भुमकाल विद्रोह के बाद अंग्रेज़ों की बर्बरता की कहानी आज भी वहाँ लोगों को गुस्से से भर देती है। आदिवासी क्रांतिकारियों ने इस विप्लव में अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए जो लड़ाई लड़ी थी उसमें हज़ारों लोग शहीद हुए।

इस लेख के लिए जिन पुस्तकों से जानकारी ली गई, उनके नाम हैं – पश्चिम बंगाल सूचना एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित 'मुक्तिर संग्रामे भारत'; कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग द्वारा प्रकाशित 'द ट्रायबल कल्चर ऑफ इण्डिया', लेखक – एल.पी. विद्यार्थी व बी.के. राय और म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित 'भुमकाल', लेखक – सुधीर सक्सेना। दो चित्र झाबुआ के पेमा फत्या ने बनाए हैं। ये चकमक के अप्रैल, 86 के अंक से लिए गए हैं। सिद् हो का रेखांकन 'मुक्तिर संग्रामे भारत' से साभार।

माथापच्ची : हल जनवरी, 1998 अंक के

1. गुड्डन ज़्यादा तेज़ है क्योंकि 1 घण्टा 10 मिनट यानी 70 मिनट। जबकि साबू वही चीज़ पढ़ने में 80 मिनट लगाता है।
2. चाँद पर कोई वातावरण नहीं होता, इसलिए वहाँ बादल नहीं हो सकते।
3. 
4. रतनपुर गाँव में 5 बुजुर्ग, 25 युवा और 70 बच्चे हैं।
5. 

6. (1) पटना (2) कटनी (3) पूना (4) भोपाल (5) सागर (6) हरदा।
7. अगर चित्र में दिखाए तरीके से इस नान को काटा जाए तो छोटे बड़े 10 टुकड़े साफ़ निकल आएँगे।



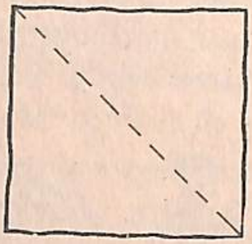
वर्ग पहेली 77 का हल

ज		कु	चा	ल	क		व	या
ग	र	ल			त	न	हा	
	सा		स	हा	रा		व	सा
भ	व	न		मी		आ		व
य		क	ढ़ी		म	हा		धा
भी		ली		पा		र	म	न
त	ज		क	ल	गी		र	
	त	ग	ड़ा			आ	ज़	म
जा	न		का	री	ग	र		ई

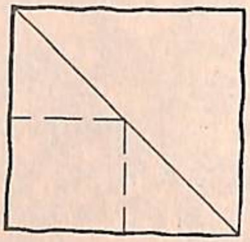
वर्ग पहेली - 77 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं – तनवीर शेख, अकबर शेख, फरहान शेख, नीमच; कैलाश प्रजापति, जावी, मंदसौर; सुधीर सिंह चंदेल, कठहा, सतना; मनोहर सिंह कंवर, टेंगनमाड़ा, बिलासपुर; अफीक महलन, नवापारा, अम्बिकापुर, प्रदीप तिर्की, चंदौरा, सरगुजा; अखिलेश कुमार मिश्र, निदवानी, शहडोल; के. आर. सोनारे, भैंसदेही; नेहा सिंगारे, सारनी, बैतूल; टीकम सिंह पोर्ते, गजमा; ऋषिकेश सिंह सिदार, देवगढ़, रायगढ़; **सभी म.प्र.**। इन्हें चकमक का अक्टूबर का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

खेल काग़ज़ का

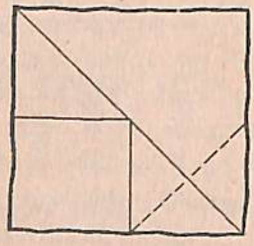
बुक मार्क



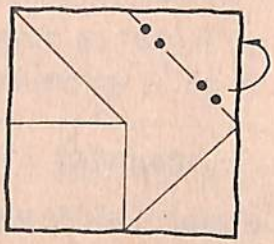
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई टूटी रेखा पर से मोड़ बना लो। निशान पक्का करके खोल लो। काग़ज़ को पलट लो।



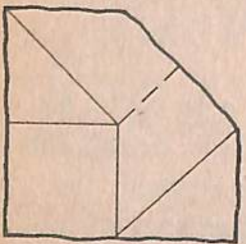
2. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ लो। मोड़ के निशान पक्के करके खोल लो।



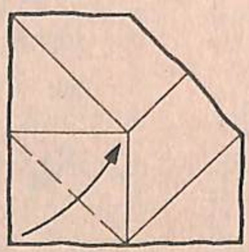
3. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर खोल लो।



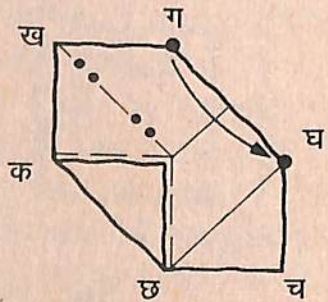
4. चित्र में दिख रही बिन्दु–रेखा पर से पीछे की तरफ मोड़ लो।



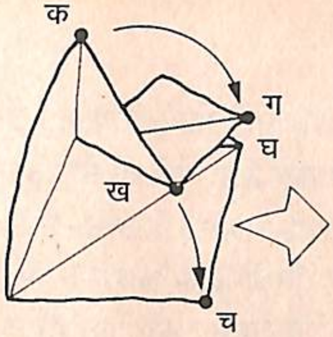
5. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ लो। मोड़ पक्का करके खोल लो।



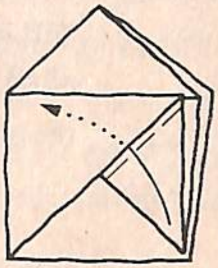
6. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



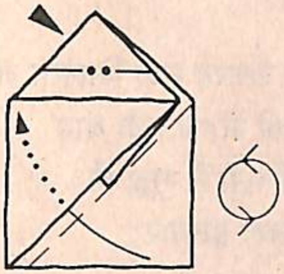
7. इस तरह की आकृति बनेगी। अब जो करना है उसे ध्यान से देखो। पहले तो अपने हाथ की आकृति को चित्र के अनुसार नाम दे दो। अब **ग** को **घ** पर ले जाओ और **ख** को **च** पर ले जाओ।



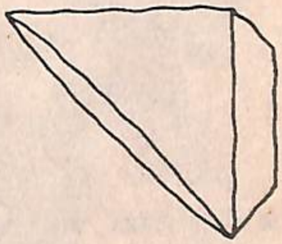
8. इस तरह। **ग** को **घ** पर ले जाते हुए **क** बिन्दु उस जगह आएगा जहाँ **ग** और **घ** मिले हुए हैं।



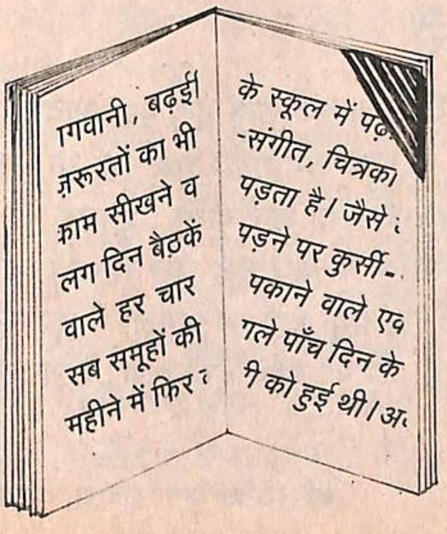
9. देखो इस तरह की घर जैसी आकृति बनेगी। अब दाँई ओर की ऊपरी सतह को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। यह **ख** बिन्दु है इसे बाँई ओर की ऊपरी सतह के नीचे घुसा दो।



10. अब **च** बिन्दु वाले कोने को भी टूटी रेखा पर से मोड़कर बाँई ओर की ऊपरी सतह के नीचे घुसा दो। इसी चित्र में ऊपर जो टूटी रेखा दिख रही है वहाँ से आगे-पीछे दोनों तरफ मोड़ के निशान बना लो। फिर इस ऊपर के कोने को उस निशान पर से अन्दर की ओर दबा दो।



11. इस तरह की आकृति बनेगी। घुमाकर देखने पर चित्र के जैसा दिखेगा। यह बुक मार्क तैयार है यानी पुस्तक में निशान लगाकर छोड़ने के लिए तुम इसका उपयोग कर सकते हो। इसे पन्ने के ऊपरी बाहरी कोने में फँसाकर रखते हैं जिससे उस पन्ने को दुबारा खोलना हो तो ज़्यादा ढूँढना न पड़े।



गुड़िया

पापा जा बम्बे से
एक गुड़िया तुम लाना
नीली आँखों वाली हो
जो जाने गुनगुनाना।

है कबाड़ी एक रामदीन
जो यह बात बोला
बड़ा दुखी था, बड़ा हताश
पर था सूरत का भोला।

बोला साब रुपया तक मिलता नहीं
दिन-दिन की मेहनत के बाद
रोटी नहीं मिली है मुझको
आज है दूसरा इतवार;

लाऊँ कहाँ से एक गुड़िया को
रुपए लागे पूरे पचास
हाय! जीवन बड़ा दुखी है
रहता हूँ हर दम उदास।

अद्वितिया, देहरादून, उ. प्र.



अंशुल देसाई, चौथी, रतलाम, म. प्र.

क्रांतिकारी

मेरे दादाजी एक बार अपने दोस्त के साथ घूमने निकले। अचानक उन्हें एक वृद्ध आदमी दिखलाई दिया, जिसके हाथ तथा अँगुलियाँ मुड़ चुकी थीं। वह लंगड़ाकर चल रहा था। सब उसे देखकर हँसने लगे। वह वृद्ध आदमी मेरे दादा जी के करीब आया और बोला, 'शायद मेरे टेढ़े हाथ–पैर को देखकर हँस रहे हो। जब अंग्रेज़ों और भारतीयों के बीच युद्ध चल रहा था, तो मैं भी एक हिंदुस्तानी क्रांतिकारी था। अंग्रेज़ मुझे पकड़कर ले गए तथा मेरी हर अंगुली में नुकीली कील ठोंक दी। तब से मैं अपंग हो गया।' यह सुनकर मेरे दादा जी को बहुत दुख हुआ। वे उनसे क्षमा माँगने लगे। उन्होंने श्रद्धा से सर झुका लिया।

नवनीत रमन, कोतबा, रायगढ़, म. प्र.

आज़ादी

कमरछठ (हलषष्ठी) का दिन था। आसपास की सभी महिलाओं ने पूजा के बाद नारियल फोड़ने के लिए मुझे बुलाया। क्योंकि वहाँ कोई लड़का नहीं था और कोई थे तो वे बहुत छोटे–छोटे थे। मैं लगभग आधे नारियल तो फोड़ चुका था। तभी एक लड़की ने कहा, मैं भी नारियल फोड़ूँगी माँ। तो उसकी माँ ने उसे यह कहते हुए चुप करवा दिया कि लड़के ही नारियल फोड़ते हैं, लड़कियाँ नहीं। इस रूढ़ीवादी परम्परा से तो लगा कि हम सचमुच अभी तक पूर्ण रूप से आज़ाद नहीं हो पाए हैं।

कुलदीप यदु, ग्यारहवीं, चंदखुरी, रायपुर, म. प्र,


प्रीति राजपूत, 7 वर्ष, लखनऊ, उ. प्र.

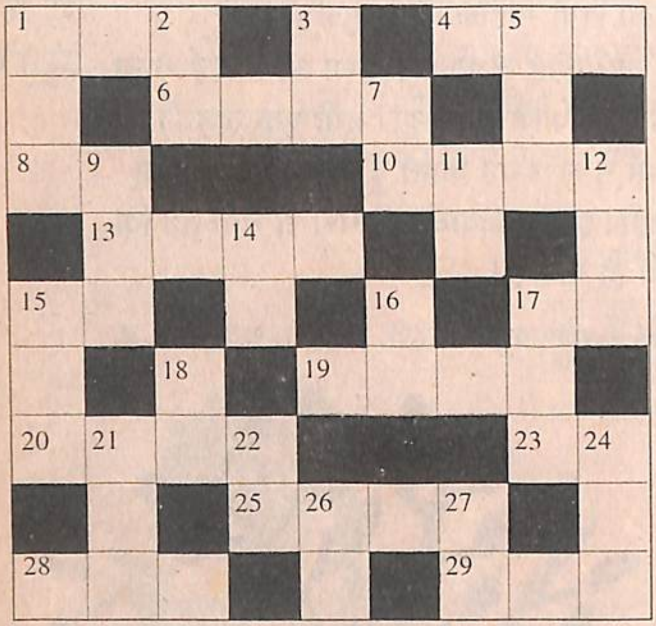
तोहफा

दिनांक 1 अप्रैल सन् 1997 को सायं काल को 8 बजे के लगभग बड़ी तेज़ हवा चल रही थी। घर में बड़ी अच्छी ठण्डी हवा आ रही थी। लगता था कहीं दूर पानी गिर गया है। जिसके कारण मिट्टी की सोंधी सुगंध आ रही थी।

दूसरे दिन दिनाँक 2 अप्रैल सन् 1997 को मैं विद्यालय में बैठा था। सभी भैया बहन पढ़ रहे थे। हमारे आचार्य ने मौसम पर कुछ वाक्य कहने को कहा। हमने मौसम के बारे में अनेक वाक्य सुनाए। इस समय भी मौसम वैसा ही था जैसा हमने अपने आचार्य जी को सुनाया। दोपहर में 3 बजे बारिश आई। स्कूल में इमलियाँ गिरीं। सभी अवकाश में इमलियाँ लेने लगे। हमारे आचार्य जी ने कहा पहले इमलियाँ सूखने दो, सड़क सूखने दो जिससे चलने में सावधानी हो। सभी जगह अँधेरा हो गया। ऐसा लगता था कि बारिश अप्रैल के लिए या नया साल के लिए तोहफा लाई हो।

मानस यादव, सातवीं, बरलई, शिप्रा, इन्दौर, म. प्र.

वर्ग पहेली – 80



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. टरटराना में किसी चीज़ को बार-बार याद करना (3)
4. मंदिर में पुजारी और गिरजाघर में . . . . (3)
6. क से लेकर ह तक की वर्णमाला (4)
8. मालूम नहीं, दुम कहाँ गई? (2)
10. आधे बज़ीलिओ की तह में है उठने-बैठने, बोलने-चालने का सलीका (4)
13. सिर के बल खड़े होने की मुद्रा (4)
15. एक पौधा जिसके रेशे के बोरे आदि बनते हैं (2)
17. सिलाई करना भी और छाती भी (2)
19. खाने–पीने के सामान के साथ दिनभर के लिए घूमने जाना (4)
20. 'बरसात लहर' में पाताल ढूँढो (4)
23. नस या शिरा (2)
25. आटा, दाल, नमक आदि बेचने वाला (4)
28. भारत के दक्षिणतम छोर पर बसा एक छोटा-सा राज्य (3)
29. शाम ढलने में ढूँढो लकड़ी के सिरे पर कपड़ा बाँधकर जलाने वाली चीज़ (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. करता लूटपाट में ढूँढो एक कन्द (3)
2. तुम्हारे चेहरे के बीचोंबीच बसा अंग, तुम्हारी इज़्ज़त! (2)
3. किसी चीज़ को बढ़ावा देना, उकसाना (2)
5. कपड़े सिलने वाला (3)
7. तराना में ढूँढो निशा (2)
9. मन की आधी खुशी में यंत्र है (3)
11. मैं का बहुवचन रूप (2)
12. सुबह न जाना, भगिनी (3)
14. असबाब में है हवा (2)
15. बस हर जगह भोर है (3)
16. कोयल की पुकार (2)
17. राजस्थान का एक ज़िला (3)
18. तरजीह में हार का उलटा (2)
21. समुन्दर (3)
22. किसी चीज़ के लचक जाने का भाव या अंजुरि (2)
24. उर्दू-फ़ारसी कविता की एक ख़ास क़िस्म जो गाई जाती है (3)
26. मारमार में एक लड़की का नाम (2)
27. हिन्दी में एक औषधीय पेड़ और फ़ारसी में आधा (2)

इस पहेली का मूल रूप हमें भेजा किशनगंज, बाराँ, राजस्थान से नीरज पोरवाल ने।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस पहेली का हल छपेगा।
वर्ग पहेली – 80 का हल मई, 1998 के अंक में देखें।
हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें।

केंद्रीय विद्यालयों की बाल विज्ञान कांग्रेस

झीलों के शहर भोपाल के उपनगर बैरागढ़ में 1 से 3 दिसम्बर, 1997 को पाँचवीं बाल विज्ञान कांग्रेस आयोजित की गई। इसमें देश भर के केंद्रीय विद्यालय के सैंकड़ों बाल वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। ये बच्चे पहले प्रांतीय स्तर पर चुने गए थे। आज यदि बच्चों को किसी चीज़ की सबसे ज़्यादा चिन्ता है तो वह है पर्यावरण की। यहाँ प्रस्तुत अधिकतर मॉडल इसका सबूत हैं। स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगाँठ में भोपाल में आयोजित इस कांग्रेस का विषय था – ''हमारे सपनों का भारत, आओ इसे साकार करें।'' यहाँ हर मॉडल के साथ एक शोध पत्र भी था। हर बच्चे ने बस्ती-बस्ती में जाकर लोगों के जीवन की परेशानियों को समीप से समझने का प्रयत्न किया। उन्होंने इन समस्याओं को दूर करने के उपाय भी सुझाए। हैदराबाद के सेंट्रल स्कूल के एक मॉडल में केले के पेड़ से कार्डबोर्ड और रस्सी कैसे बनाई जाती है उसकी अलग-अलग प्रक्रियाएँ दिखाई गईं थीं।

भोपाल के केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -2 के चलित मॉडल में दिखाया गया कि गंदे पानी को पीने लायक कैसे बनाया जाए। इसके लिए बच्चों ने अलग-अलग झुग्गी बस्तियों में सर्वे किया, वहाँ से पानी के नमूने इकट्ठा किए। और एक अन्य स्कूल की प्रयोगशाला में उन पानी के नमूनों की जाँच की और पता लगाने की कोशिश की कि पानी किस-किस वजह से प्रदूषित हुआ है।



फोटो में रत्नेश अपने बनाए मॉडल के साथ।

बम्बई के केंद्रीय विद्यालय के बच्चों ने पॉलीथिन के कारण फैल रहे प्रदूषण के बारे में सर्वे किया। जिसे उन्होंने फोटो और चार्ट के द्वारा दिखाया। हम रोज़ाना पॉलीथिन का कितना इस्तेमाल करते हैं, उसमें भरकर बाज़ार से सामान लाते हैं, घर से उसमें कचरा भरकर या वैसे ही फेंक देते हैं। कचरा उसी पॉलीथिन की थैली में सड़ जाता है। कभी फेंकी हुई पॉलीथिन नालियों में फँस जाती है। और गन्दा पानी सब जगह फैल जाता है। इसके साथ में सुझाव यह था कि पॉलीथिन का कम से कम इस्तेमाल करें। और सामान लेने जाते वक़्त घर से थैला लेकर जाएँ।

बम्बई के ही एक और सेंट्रल स्कूल से बच्चों ने भिखारियों पर सर्वे किया था। ख़ासकर भिखारी बच्चों पर कि कैसे बच्चों को भिखारी बनाया गया।

सारे मॉडल बहुत अच्छे थे। ख़ासतौर पर जल प्रदूषण से जुड़े बम्बई, नागपुर और जम्मू-कश्मीर से आए मॉडल। हमारे स्कूल के बच्चों ने बस्तियों में जाकर पानी के सेम्पल (नमूने) लिए और टीचर ने उसका एनालसिस (परीक्षण) किया। बस्ती के लोगों से उन्हें मिलने वाले पानी के बारे में पूछताछ की।

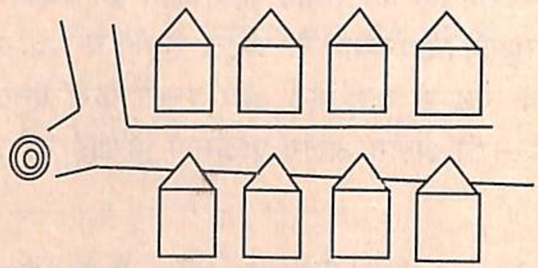
सेंट्रल स्कूल, भोपाल के छात्र रत्नेश, ऋचा तथा एक शिक्षक से बातचीत के आधार पर।



माथापच्ची

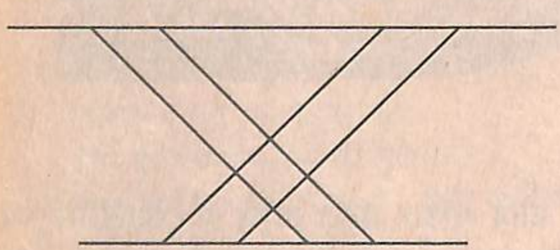
(1)

हमारी गली में घरों के नम्बर इस तरह हैं कि एक नम्बर गली के एक तरफ के मकान का, तो अगला नम्बर दूसरी तरफ वाले का। फिर तीसरा नम्बर पहली तरफ वाले घर का . . .। मेरे घर की लाइन के सभी चारों नम्बर सम संख्याएँ हैं। और उनका जोड़ 2276 आता है। इनमें से सबसे छोटी संख्या मेरे घर का नम्बर है। क्या तुम वह निकाल सकते हो?



(2)

पहले तो यह गिनकर बताओ कि इस चित्र में कुल कितने त्रिभुज हैं। फिर यह भी बताओ कि कितने द्विसमबाहु त्रिभुज हैं। यानी ऐसे त्रिभुज जिनकी कोई भी दो भुजाओं का नाप बराबर हो।



(3)

2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
7	2	9	8	13	6	3	16	1	?

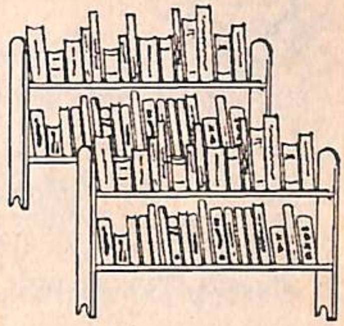
ये संख्याएँ एक ख़ास क्रम में लिखी गई हैं। क्या तुम इस क्रम को पहचानकर बता सकते हो कि नीचे दी गई संख्याओं में से कौन-सी संख्या 11 के नीचे आएगी?

3 4 7 11 1 5

(4)

रवि के स्कूल में पढ़ाई के अलावा एक कोई हाथ के कौशल का विषय भी सीखना पड़ता है, जैसे बागवानी, बढ़ईगिरी, गीत –संगीत, चित्रकारी या खाना पकाना। सिर्फ़ सीखना ही नहीं पड़ता, स्कूल की इससे सम्बंधित ज़रूरतों का भी ख़्याल रखना पड़ता है। जैसे बागवानी वाले सारे बच्चे स्कूल के बगीचे का ख़्याल रखते हैं। बढ़ई का काम सीखने वाले बच्चे ज़रूरत पड़ने पर कुर्सी - मेज़ बनाते हैं आदि। इन ज़रूरतों का ख़्याल रखने के लिए ये अलग - अलग दिन बैठकें भी करते हैं। खाना पकाने वाले एक दिन छोड़कर, बागवानी वाले हर तीसरे दिन, बढ़ईगिरी वाले हर तीन दिन बाद, चित्रकारी वाले चार दिन के बाद और गीत- संगीत वाले हर छठे दिन मिलते हैं। इस साल इन सब समूहों की पहली बैठक पहली जनवरी को हुई थी। अब अगर वे अपने - अपने हिसाब से मिलते रहें तो क्या जनवरी के महीने में फिर कोई ऐसा दिन आया होगा जब सारे समूह एक साथ मिले हों? अगर हाँ तो कौन - सा?

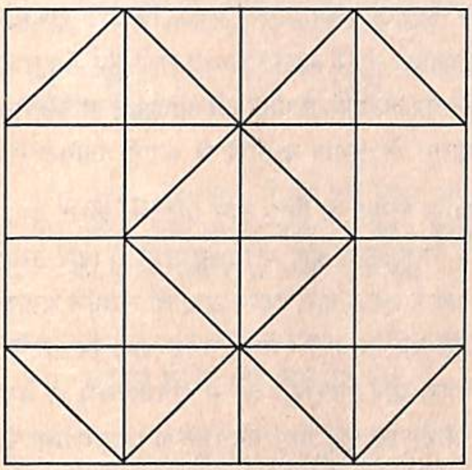
(5)



चकमक के दफ़्तर में चकमक के पुराने अंकों की गिनती की जा रही थी। एक रैक में सजिल्द सालाना खण्ड रखे थे। ये खण्ड इस तरह रखे थे कि एक की जिल्द वाली सतह सामने की तरफ थी, तो दूसरे की पन्नों वाली सतह। कविता ने सबसे ऊपर वाली ताक पर रखे खण्डों की गिनती शुरू की। उसने पहले सामने से वे खण्ड गिने जिनकी जिल्द वाली सतह दिख रही थी। ये 12 थे। फिर दूसरी तरफ जाकर उसने वे खण्ड गिने जिनकी पन्नों वाली सतह दिख रही थी। इनका कुल जोड़ आया 24, अब क्या तुम बता सकते हो कि उस ताक पर कुल कितने खण्ड रखे हो सकते हैं?

(6)

इस चित्र में कितने वर्ग हैं? और कितने त्रिभुज हैं? गिनकर बताओ।



(7)

नन्हा रेहान अपनी मौसी के साथ ननिहाल जा रहा था। उसके ननिहाल में मुर्गी पाली जाती थी। और रज़िया मौसी ने अभी-अभी उसे बताया था कि वहाँ चूज़ों का एक नया कुनबा पैदा हुआ है। रेहान जानना चाहता था कि कितने नन्हे-नन्हे चूज़े हैं। पर मौसी ने सीधे-सीधे बताने के बजाय कहा, ''जितने असल में चूज़े हैं, उनमें उतने और जोड़ दो, फिर उनमें आधे और जोड़ दो, फिर 7 जोड़ दो तो 32 की संख्या आ जाती है। अब तुम खुद ही पता लगाओ कि कितने चूज़े हैं।''

रेहान तो हिसाब लगाने में उलझा है। तुम भी कोशिश करो।

(8)

1 से 7 तक के अंकों को इस प्रकार जमाओ कि उससे बनने वाली संख्याओं और अंकों का जोड़ 100 आए।

(9)

'यह' और 'वह' और 'आधा यह' और 'आधा वह' सब जोड़कर बनते हैं 6। बता सकते हो 'यह' और 'वह' क्या है?

(10)



ये सब एक दूसरे से सटे हुए गियर हैं। एक को घुमाओ तो सारे के सारे घूमने लगते हैं। अगर ऊपर के तीर वाले गियर को घड़ी की सुई की दिशा में 90^0 पर घुमाया जाए तो नीचे के दाहिने (तीर वाले) गियर के तीर की दिशा क्या होगी?

एक अनूठा बालोत्सव

तुमने पिछले बाल दिवस पर रैली निकाली होगी। कई प्रतियोगिताओं में हिस्सेदारी की होगी और भी ढेरों मज़ेदार गतिविधियाँ की होंगी। आओ हम तुम्हें एक ऐसी जगह के बारे में बताएँ जहाँ बच्चे भी अनूठे थे और बाल दिवस भी अनूठे रूप से मनाया गया।

म.प्र. में झाबुआ से 56 कि.मी. दूर है पेटलावद तहसील का ग्राम रायपुरिया। यहाँ एक संस्था है 'सम्पर्क'। सम्पर्क संस्था पेटलावद तहसील के 50 गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, पंचायत और विकास के कई काम कर रही है। यह मुख्य रूप से आदिवासी बहुल क्षेत्र है। यहाँ शिक्षा की बहुत दिक़्क़तें हैं, स्कूल भी नहीं हैं और परिवारों का रोज़गार की तलाश में यहाँ-वहाँ आना-जाना भी बहुत होता है। जो बच्चे वहीं रहकर कुछ पढ़ना चाहते हैं, गरीबी इतनी है कि वे पढ़ नहीं पाते। सम्पर्क संस्था ने इन गाँवों के बच्चों के लिए रात्रि शालाएँ खोली हैं। दिन भर बच्चे खेतों में काम करते हैं, ढोर चराते हैं, मज़दूरी करते हैं और रात को पढ़ाई करते हैं। सम्पर्क संस्था हर वर्ष इन बच्चों के बीच एक बड़ा बाल मेला भी करती है और कार्यशालाएँ भी।

इस वर्ष के बाल मेले में कई मज़ेदार गतिविधियाँ हुईं। बाल मेला तीन दिन के लिए सम्पर्क संस्था के परिसर में ही आयोजित था। एक दिन पहले सम्पर्क के कार्यकर्त्ताओं ने बच्चों को दूर-दूर गाँवों से लाने के लिए ट्रेक्टर की सहायता ली। सभी डेढ़ सौ बच्चे जिसमें करीब आधी लड़कियाँ थीं, पहली बार गाँवों से बाहर निकले थे, घर छोड़कर। सभी बच्चों को छह समूहों में बाँट दिया गया था। सभी समूहों ने पहले दिन बारी-बारी से काग़ज़ के खिलौने, पत्तियों का जादू, विज्ञान के प्रयोग, माथापच्ची, शैक्षिक खिलौने, चित्रकला, मिट्टी के खिलौने एवं कुम्हार के चाक पर बर्तन बनाना, मैदानी खेल, विज्ञान के चमत्कार आदि गतिविधियाँ सीखीं। चित्रकला में जो करतब इन बच्चों ने दिखाए वो अद्भुत थे।

दूसरे दिन इन बच्चों के लिए दौड़, कबड्डी, लम्बी कूद, बोरा दौड़, तीन पाँव की दौड़ आदि प्रतियोगिताएँ थीं जिसमें हर बच्चे ने उत्साह से हिस्सेदारी की। विशेषकर लड़कियों ने कबड्डी में बहुत उत्साह दिखाया! इसी दिन शाम को बाल पंचायत के चुनाव की प्रक्रिया आरम्भ हुई। हर समूह को एक फल्या (मोहल्ला) माना गया और बच्चों ने एक बच्चे को अपना पंच चुना। बाद में सरपंच के चुनाव हेतु पाँच बच्चों ने जिनमें दो लड़कियाँ थीं, अपने दो-दो समर्थकों के साथ नामांकन भरा। रात को संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने बढ़िया कठपुतली का खेल आयोजित किया जिसमें बच्चों को खूब मज़ा आया।

बाल मेले के अंतिम दिन सुबह से सरपंच के चुनाव हेतु बच्चों में विशेष उत्साह था। पाँचों उम्मीदवार बच्चों ने रात को देर तक जागकर अपना प्रचार किया। 'सम्पर्क' की रात्रि शालाओं में भी बाल पंचायत बनी हुई हैं। बच्चों से बातें करने पर लगा कि वे गाँवों की आज की राजनैतिक स्थिति, पंचायत के चुनाव के बारे में काफी जानते हैं।

सरपंच के चुनाव के लिए तीन मतदान केन्द्र बनाए गए। मतपत्र, मतपेटियाँ और मतदाता सभी थे। बस मज़ा आ गया चुनाव में। बच्चे वोट देकर आए तो उन्होंने बताया नहीं कि किसे वोट दिया है। मतदान के बाद रस्साखींच प्रतियोगिता हुई और फिर सबको सामूहिक रूप से बैठा दिया गया और शुरू हुई मतों की गिनती। मतगणना के छह दौर हुए। चुनाव अधिकारी हरीश पवार ने मोतीराम को सर्वाधिक मत मिलने के कारण सरपंच घोषित किया। फिर क्या था सरपंच मोतीराम को पगड़ी, धोती और हार पहनाया गया, धूम-धड़ाका हुआ। कार्यक्रम के समापन समारोह में छहों पंचों और सरपंच मोतीराम ने सब बच्चों को सम्बोधित किया कि वे स्कूल की बेहतरी के लिए काम करेंगे। सभी स्कूल के शिक्षकों को घंटियाँ बाँटी। ये घंटियाँ चुने गए नए सरपंच मोतीराम ने दी।

तीन दिन के आवासीय मेले में खूब मज़े से दिनभर गतिविधियाँ, खेलकूद करते शाम को शैक्षिक फ़िल्में देखते और देर रात तक भीली में गाने गाते, झूमकर नाचते रहते। सम्पर्क के कार्यकर्ताओं को बाल मेले में सहयोग देने के लिए एकलव्य, देवास एवं हरदा के साथी भी मौजूद थे।

रपट : संदीप नाईक
एकलव्य, देवास

क़िस्सा-बुरातीनो का



अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। फिर पुलिस के कुत्ते बुरातीनो को नगर के बाहर गन्दे तालाब में फेंक आए। तालाब के कूबर कछुए ने उसे बचाया और सोने की चाबी दी। सोने की यह चाबी काराबास बाराबास भी पाना चाहता था। इसी चक्कर में काराबास बाराबास तथा बुरातीनो के बीच लुका-छिपी चलती रही।

आख़िरकार बुरातीनो पापा कार्लो से जा मिला। कार्लो, बुरातीनो और उसके साथियों को लेकर घर लौट आया। उधर काराबास बाराबास कार्लो की शिकायत करने कोतवाली की ओर भागा।

काराबास बाराबास कोतवाली से चार पुलिसवालों को लेकर कार्लो के घर पहुँचा। उधर कार्लो और उसके नन्हे साथी दीवार में बने रहस्यमय दरवाज़े से अन्दर चले गए। काराबास बाराबास पुलिसवालों के साथ कार्लो के घर अन्दर तो घुस गया, लेकिन उससे रहस्यमय दरवाज़ा नहीं खुला।

अन्दर तहखाने में एक सुन्दर कठपुतली थियेटर बना हुआ था। पास में बनी एक मीनार पर एक घड़ी लगी हुई थी। पापा कार्लो ने घड़ी में चाबी भर दी। चाबी भरते ही घड़ी ने छह बजाए। और फिर थियेटर के मंच पर तरह-तरह के दृश्य आने लगे।

पापा कार्लो, मलवीना, पियेरो इन दृश्यों को देखकर ठगे से रह गए। बुरातीनो ने कहा अब हम इस थियेटर में एक नाटक पेश करेंगे, नाम होगा- 'सोने की चाबी यानी किस्सा बुरातीनो और उसके दोस्तों का'। सबने इस नाटक में कुछ न कुछ करने की इच्छा ज़ाहिर की। अब आगे पढ़ो.....

पहले दिन का पहला शो

काराबास बाराबास सुलगते अलाव के पास खीझा हुआ बैठा था। गीली लकड़ियाँ मुश्किल से जल रही थीं। बाहर सड़क पर पानी झमाझम बरस रहा था। उसके कठपुतली थियेटर की छत टपक रही थी। कठपुतलों और कठपुतलियों के हाथ-पाँव, भीगकर फूल गए थे। रिहर्सल कोई करना नहीं चाहता था, यहाँ तक कि कोड़े से उनकी खाल खींच लेने की धमकी भी बेअसर रही। नन्हे-मुन्नों ने तीन दिन से खाना नहीं खाया था। उनका भूख से दम निकला जा रहा था और गोदाम में खूँटियों पर टंगे-टंगे वे आपस में फुसफुसाकर बातें कर रहे थे।

सुबह से काराबास बाराबास के कठपुतली थियेटर का एक भी टिकट नहीं बिका था। वैसे भी काराबास के थियेटर में अब रखा ही क्या था? दर्शकों को बोर करनेवाले खेल-तमाशे और भूखे-नंगे कलाकार!

शहरी घण्टाघर की घड़ी ने छह बजाए। काराबास बाराबास उदास मन से धीरे-धीरे भारी कदम रखता हुआ थियेटर के ख़ाली हॉल में पहुँचा।

"जहन्नुम में जाएँ ये सारे के सारे दर्शक महानुभाव!" बड़बड़ाता हुआ वह बाहर निकला। बाहर निकलकर उसने एक नज़र सामने डाली, आँखें झपकाईं और उसका मुँह आप से आप ही खुल गया। इतना चौड़ा कि उसमें आसानी से एक समूचा कौव्वा घुस जाए। उसके थियेटर के सामने बड़े से नए तम्बू के करीब दर्शकों की लाइन लगी हुई थी। समुद्र की ओर से आती हुई ठण्डी हवा की भी लोग परवाह नहीं कर रहे थे।

प्रवेश द्वार के ऊपर बने मचान पर खूब लम्बी नाकवाला एक नन्हा-मुन्ना लड़का सिर पर फुन्देदार टोपी लगाए खड़ा था, वह मुँह में भोंपू लगाए चिल्ला-चिल्लाकर कुछ कहता जा रहा था। दर्शकों की भीड़ हँसते हुए ख़ुशी-ख़ुशी तालियाँ बजा रही थी।

बहुत से लोग तम्बू के अन्दर जा रहे थे।

काराबास बाराबास के पास काई की बदबू मारता जोंकमार आ पहुँचा। "ही-ही-ही," उसने खीसें निपोरीं और उसका चेहरा झुर्रियों से भर गया, "जोंक के धन्धे में अब धरा ही क्या है? वहाँ जाकर उन लोगों से बात करना चाहता हूँ," जोंकमार ने तिरपाल के नए तम्बू की ओर इशारा किया, "थियेटर में बत्ती जलाने या झाड़ू लगाने की नौकरी ही दे दें।"

"किसका है यह कमबख़्त थियेटर? कहाँ से आ टपका यह?" काराबास बाराबास ज़ोर से गरजा। "खुद कठपुतलों और कठपुतलियों ने मिलकर 'बिजली' नाम का एक नया थियेटर खोला है, वे खुद अपने थियेटर के लिए कविताओं वाले नाटक लिखते हैं और अभिनय भी ख़ुद ही करते हैं।"

काराबास बाराबास दाँत पीसता हुआ अपनी दाढ़ी नोचने लगा और तिरपाल वाले नए कठपुतली थियेटर की ओर बढ़ चला।

उसके प्रवेश द्वार पर मचान से बुरातीनो ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाए जा रहा था, "नए थियेटर का उद्घाटन, पहला दिन, पहला शो! काठ के नन्हे-मुन्नों की बहादुरी के सच्चे कारनामे। दुश्मनों को धूल चटानेवाले दिलेर कठपुतलों और कठपुतलियों की हिम्मत और हाज़िरजवाबी का एक



बेहद मनोरंजक ड्रामा, ठहाकों और कहकहों से भरपूर!"

थियेटर के प्रवेश द्वार पर काँच के बूथ में नीले बालों पर खूबसूरत रिबन बाँधे हुए मलवीना जल्दी-जल्दी टिकट बेचती जा रही थी।

पापा कार्लो नई मखमली जैकेट पहने हुए फेरीवाले बाजे का हैंडिल घुमाते जा रहे थे और दर्शकों को आँखें मारते जा रहे थे।

आर्तेमोन लोमड़ी अलीसा की दुम पकड़कर उसे तम्बू के बाहर खींच रहा था। वह बिना टिकट अन्दर घुसी आ रही थी।

यूँ तो बिल्ला बज़ीलिओ भी बेटिकट था, पर पकड़े जाने के डर से वह पहले ही निकल भागा और बरसते पानी में पेड़ पर जा बैठा। वह सिर झुकाए ग़ुस्से से तमतमाया हुआ बैठा था।

बुरातीनो भोंपू में मुँह सटाकर, गाल फुलाकर भारी आवाज़ में बोला, "अब हमारे थियेटर का पहला शो शुरू होने जा रहा है!"

और वह सीढ़ी से उतरा, भागता हुआ नीचे जा पहुँचा, ताकि पहले दृश्य में वह अभिनय कर सके, जिसमें दिखलाया गया है कि किस प्रकार गरीब पापा कार्लो लकड़ी के कुन्दे को छीलकर एक





कठपुतले को गढ़ता है। तब उसे क्या पता था कि यह कठपुतला उसकी क़िस्मत ही बदलकर रख देगा।

धीरे-धीरे रेंगता हुआ बूढ़ा कछुआ कूबर भी सबसे आख़िर में थियेटर आ पहुँचा। वह अपने मुँह में विशेष अतिथियों वाला चर्मपत्र का एक टिकट दबाए हुए था। टिकट के चारों कोनों पर सुनहरे बेल-बूटे चमचमा रहे थे।

नए थियेटर का पहला शो प्रारम्भ हो गया। काराबास बाराबास मुँह लटकाए हुए अपने खाली थियेटर में वापस लौट आया। उसने अपना सतमुँहा हण्टर निकाला और फिर कोठरी का दरवाज़ा खोला, "ठहरो बदमाशो, सारी मटरगश्ती झाड़े देता हूँ!" वह गरजा। "अभी खाल उधेड़ी नहीं कि सब सीख जाओगे!"

फिर उसने सटाक से हण्टर फटकारा। लेकिन सब तरफ़ ख़ामोशी छाई रही। कोठरी तो पहले ही ख़ाली हो चुकी थी। खूँटियों पर सिर्फ़ रस्सी के टुकड़े लटक रहे थे।

सभी कठपुतले और कठपुतलियाँ - आर्लेकिन, काले नकाबवाली लड़कियाँ, सितारेदार नुकीली टोपियोंवाले ठिठोलिए, खीरे जैसी मोटी नाकवाले कुबड़े और कुत्ते - सभी काराबास बाराबास के थियेटर से निकल भागे थे।

वह एक भयानक दहाड़ के साथ थियेटर से बाहर निकला। देखता क्या है कि उसके उजड़े थियेटर के बचे-खुचे कलाकार भी उसे छोड़कर नए जगमगाते हुए थियेटर में जा रहे हैं, जहाँ से इस समय मधुर संगीत, दर्शकों के कहकहे, ठहाके और उनकी तालियों की गड़गड़ाहट बार-बार गूँज रही थी।

काराबास बाराबास रूई के बने बटनदार आँखोंवाले एक कुत्ते को ही किसी तरह पकड़ पाया। लेकिन वह उसे अभी अपने चंगुल में जकड़ ही पाया था कि आर्तेमोन ने उस पर घातक हमला कर दिया, उस कुत्ते को छुड़ा लिया और तिरपालवाले तम्बू में जा पहुँचा, जहाँ इस वक़्त भूख से बेहाल कठपुतली कलाकारों के लिए खाना बन रहा था।

काराबास बाराबास बरसात में भीगता हुआ एक डबरे में बैठा रो रहा था।

(समाप्त)



('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार। लेखक : अलेक्सेई तोलस्तोय, सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन)



नाज़िया फर, दसवीं, भोपाल, म.प्र.



राधा शाक्य, दसवीं, भोपाल, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/98



मोहनदास, सोमगाँव कलाँ, होशंगाबाद, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना